लेखा संगम

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth In Public Interest

16वां अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–प्रथम
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

लेखा संगम
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
इलाहाबाद

केवल विभागीय वितरण हेतु

16वां अंक

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth In Public Interest

हिंदी पत्रिका

लेखा संगम

जुलाई 2020 से दिसंबर 2020

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – प्रथम

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – द्वितीय

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

लेखा संगम परिवार

संरक्षक

श्री राम हित
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—प्रथम
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री आर. के. सोलंकी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

परामर्शदाता

श्री राजेंद्र कुमार खरे
वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय

संपादक

श्री अरशद इदरीस
वरिष्ठ लेखाधिकारी

सह—संपादक

सुश्री साधना राय
हिंदी अधिकारी

श्री अभिषेक होडल
सहायक लेखाधिकारी

सहायक संपादक

श्री अमीन अली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

साज—सज्जा

श्री लोकेश चंद्र लाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सहयोग

सुश्री प्रज्ञा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मूल्य : निःशुल्क (राजभाषा हिन्दी को समर्पित)
(नोट : लेखकीय विचारों से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है)
मुख पृष्ठ : संगम, प्रयागराज
कुल पृष्ठ : 56

अनुक्रमणिका

गद्य

क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार (श्री/सुश्री)	पृष्ठ संख्या
01	*अधिवक्ता की बुद्धि*	श्री रवीन्द्र कुमार शर्मा	11
02	*लघुकथा – पिन*	श्री अंकित निगम	13
03	*सफ़र*	श्री ज्ञानेन्द्र गुप्ता	17
04	*एक अनोखा इंसान*	श्री ओम कुमार मौर्या	22
05	*छठ महापर्व*	श्री लक्ष्मण प्रसाद	24
06	*कोरोना के डर से पुरानी प्राकृतिक इलाज पद्धतियों पर लोगों का विश्वास बढ़ा*	श्री सतीश राय	26
07	*चुनौतियों का सामना करती आज की महिला*	डॉ. नमिता चंद्रा	28
08	*लड़कियाँ और पुरानी सोच*	सुश्री आकृति कुशवाहा	31
09	*पगलिया*	श्री शशांक त्रिवेदी	32
10	*एक रुपये की कीमत*	श्री शंकर लाल	34
11	*जीवन का उद्देश्य*	श्री भूपेन्द्र सिंह नेगी	36
12	*परिवर्तन*	श्री अशोक कुमार	38

पद्य

क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार (श्री/सुश्री)	पृष्ठ संख्या
13	*प्रकृति देवो भव*	श्री अजय वर्मा	40
14	*मेरी भाषा हिंदी*	श्री अनुराग निषाद	41
15	*प्रेरणा*	श्री अरुण कुमार सिंह	42
16	*ग़ज़ल*	श्री सग़ीर अहमद सिद्दीक़ी	43
17	*बहादुर शाह ज़फर* *(तृतीय और अंतिम भाग)*	श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल	44
18	*माँ*	श्री चंचल कुमार तिवारी	46
19	*कविता*	सुश्री पुष्पा मिश्रा	47

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के सोलहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । मुझे अत्यंत प्रसन्नता होती है कि कार्यालय में सभी अधिकारी और कर्मचारी पूर्ण निष्ठा एवं मनोयोग से अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी भाषा में करके राजभाषा का सतत उन्नयन एवं सम्मान बढ़ाते हुए पत्रिका को भी अपनी बोधगम्य रचनाओं से सुदृढ़ कर रहे हैं।

हमारी यह पत्रिका केवल कुछ पन्नों का संकलन मात्र नहीं है अपितु इसका प्रत्येक अंक अपने अंदर मौलिकता, सरसता एवं राजभाषा हिन्दी संबंधी ज्ञान धारण किए हुए है । इसका मूल उद्देश्य कर्मचारियों की सृजनात्मक शक्ति एवं अभिव्यक्ति कौशल के माध्यम से राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना एवं कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को सामने लाना है।

पत्रिका के प्रकाशन में निरंतरता तथा रचनाओं की सारगर्भिता बनाए रखने में "लेखा संगम" परिवार के अथक परिश्रम के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

(राम हित)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि "लेखा संगम" पत्रिका अपने 16वें अंक में प्रवेश कर चुकी है। पत्रिका निश्चित रूप से राजभाषा हिंदी के प्रसार हेतु लक्षित उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति करने में अग्रणी भूमिका निभा रही है। "लेखा संगम" रचनाकारों की प्रतिभा को उनकी रचनाओं के माध्यम से उजागर करती रही है और उनकी सृजनात्मकता को बढ़ावा देने का मंच प्रदान करती रही है।

इस अंक में रचनाओं का संकलन सराहनीय है। आशा है कि भविष्य में "लेखा संगम" के लेखकों की लेखनी नई ऊंचाईयों को प्राप्त करेगी और राजभाषा हिंदी को उत्कर्ष के शिखर तक लेकर जाएगी।

पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन पर मैं संपादक मंडल और रचनाकारों को बधाई देता हूँ। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

(आर. के. सोलंकी)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों...

''लेखा संगम'' पत्रिका अपने 16वें अंक में प्रवेश कर चुकी है जिसको आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुये अपार हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है। मैं सभी रचनाकारों का आभारी हूँ जिनके रचना रुपी लहरों से मिलकर "लेखा संगम" पत्रिका रुपी सुन्दर संगम का यह अंक प्रवाहित हो चला है। मैं यह मंगल कामना करता हूँ कि सभी लेखकों की लेखनी यूँ ही नये आयामों को प्राप्त करती रहे जिससे नयी-नयी सुन्दर रचनाओं का प्रवाह होता रहे।

पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देती है अपितु रचनाकारों की लेखनी को एक मंच भी प्रदान करती है जिससे हमारा नये-नये प्रतिभाशाली रचनाकारों से साक्षात्कार होता है। पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिये ही समर्पित है और विभिन्न विधाओं की रचनाओं से परिपूर्ण है। राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिये हमें संकल्प लेना होगा कि हम सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिये भरसक प्रयास करेंगे।

आशा करता हूँ कि यह अंक आप सभी को पसंद आयेगा और इस सम्बन्ध में आपके बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रिया पत्रिका को और अधिक समृद्ध बनाने में हमारा मार्गदर्शन करेंगे। "लेखा संगम" के सभी रचनाकारों, पाठकों एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बहुमूल्य सुझाव एवं दिशानिर्देश देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पत्रिका-परिवार की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद।

अरशद इदरीस

(अरशद इदरीस)
संपादक

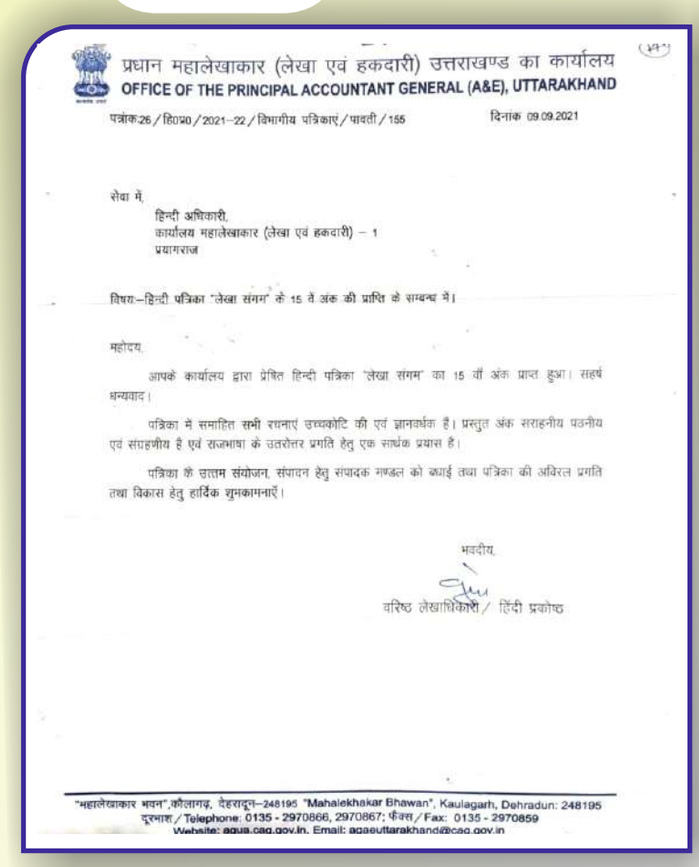

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), UTTARAKHAND

पत्रांक26 / हि0प्र0 / 2021–22 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 155 दिनांक 09.09.2021

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – 1
प्रयागराज

विषय:–हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम" के 15 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम" का 15 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक है। प्रस्तुत अंक सराहनीय पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उतरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखाधिकारी / हिंदी प्रकोष्ठ

"महालेखाकार भवन",कौलागढ़, देहरादून–248195 "Mahalekhakar Bhawan", Kaulagarh, Dehradun: 248195
दूरभाष / Telephone: 0135 - 2970866, 2970867; फैक्स / Fax: 0135 - 2970859
Website: agua.cag.gov.in, Email: agaeuttarakhand@cag.gov.in

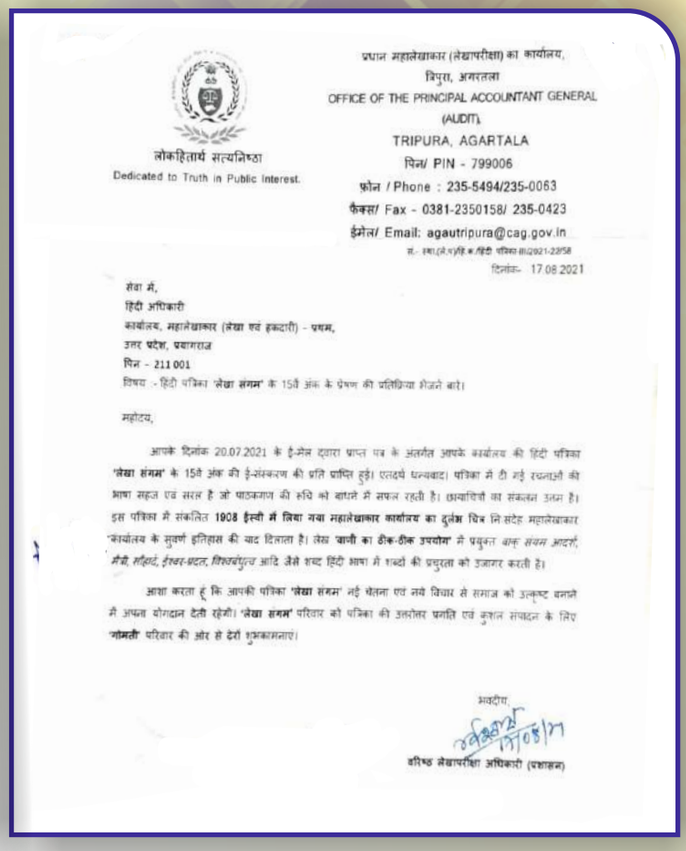

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest.

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय,
त्रिपुरा, अगरतला
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(AUDIT),
TRIPURA, AGARTALA
पिन/ PIN - 799006
फ़ोन / Phone : 235-5494/235-0063
फैक्स/ Fax - 0381-2350158/ 235-0423
ईमेल/ Email: agautripura@cag.gov.in
स.- स्था.(ले.प.)/हि.क./हिंदी पत्रिका-III/2021-22/58
दिनांक- 17.08.2021

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज
पिन - 211 001
विषय :- हिंदी पत्रिका **'लेखा संगम'** के 15वें अंक के प्रेषण की प्रतिक्रिया भेजने बारे।

महोदय,

आपके दिनांक 20.07.2021 के ई-मेल द्वारा प्राप्त पत्र के अंतर्गत आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका **'लेखा संगम'** के 15वें अंक की ई-संस्करण की प्रति प्राप्ति हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में दी गई रचनाओं की भाषा सहज एवं सरल है जो पाठकगण की रुचि को बांधने में सफल रहती है। छायाचित्रों का संकलन उत्तम है। इस पत्रिका में संकलित **1908 ईस्वी में लिया गया महालेखाकार कार्यालय का दुर्लभ** चित्र निःसंदेह महालेखाकार कार्यालय के सुवर्ण इतिहास की याद दिलाता है। लेख **'वाणी का ठीक-ठीक उपयोग'** में प्रयुक्त *वाक् संयम आदर्श, मैत्री, सौहार्द, ईश्वर-प्रदत्त, विश्वबंधुत्व* आदि जैसे शब्द हिंदी भाषा में शब्दों की प्रचुरता को उजागर करती है।

आशा करता हूँ कि आपकी पत्रिका **'लेखा संगम'** नई चेतना एवं नये विचार से समाज को उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान देती रहेगी। **'लेखा संगम'** परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए **'गोमती'** परिवार की ओर से ढेरों शुभकामनाएं।

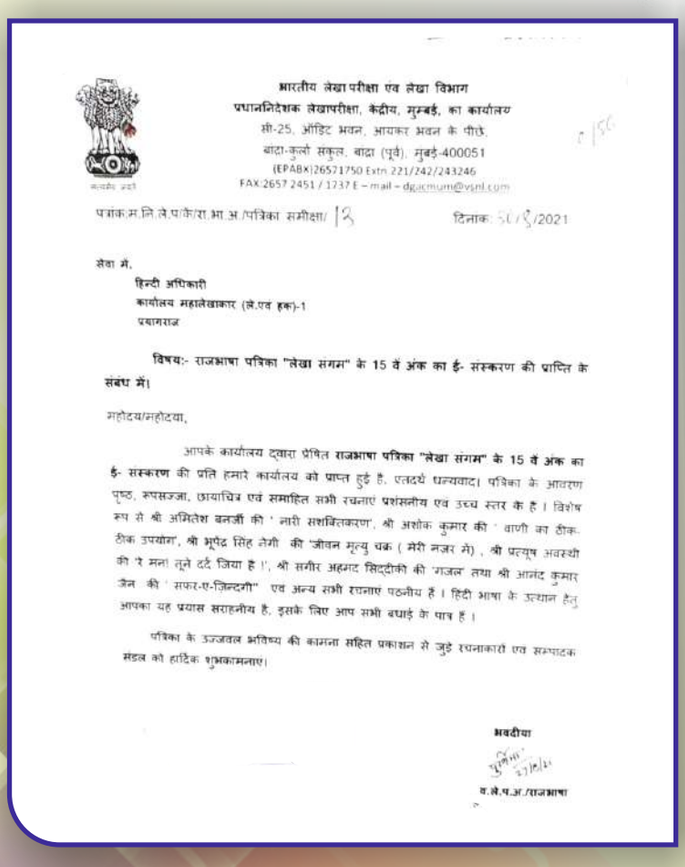

भवदीय,

17/08/21
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग
प्रधाननिदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय, मुम्बई, का कार्यालय
सी-25, ऑडिट भवन, आयकर भवन के पीछे,
बांद्रा-कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400051
(EPABX)26571750 Extn 221/242/243246
FAX:2657 2451 / 1737 E – mail – dgacmum@vsnl.com

पत्रांक:म.नि.ले.प/कें/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/ 12 दिनांक: 30/8/2021

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले.एवं हक)-1
प्रयागराज

विषय:- राजभाषा पत्रिका **"लेखा संगम" के 15 वें अंक का ई- संस्करण की प्राप्ति के संबंध में।**

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के 15 वें अंक का ई- संस्करण** की प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ, रूपसज्जा, छायाचित्र एवं समाहित सभी रचनाएं प्रशंसनीय एवं उच्च स्तर के है । विशेष रूप से श्री अमितेश बनर्जी की ' नारी सशक्तिकरण', श्री अशोक कुमार की ' वाणी का ठीक-ठीक उपयोग', श्री भूपेंद्र सिंह नेगी की 'जीवन मृत्यु चक्र (मेरी नजर में) , श्री प्रत्यूष अवस्थी की 'रे मना तूने दर्द जिया है !', श्री सगीर अहमद सिद्दीकी की 'गजल' तथा श्री आनंद कुमार जैन की ' सफर-ए-ज़िन्दगी" एवं अन्य सभी रचनाएं पठनीय हैं । हिंदी भाषा के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं ।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

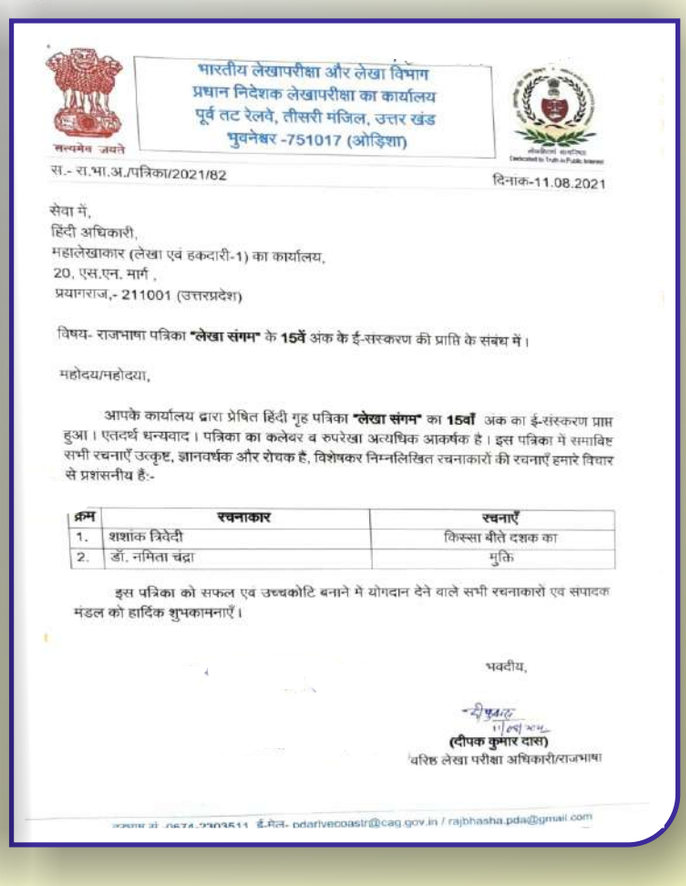

भवदीया

व.ले.प.अ./राजभाषा

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, उत्तर खंड
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2021/82 दिनाक-11.08.2021

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-1) का कार्यालय,
20, एस.एन. मार्ग ,
प्रयागराज,- 211001 (उत्तरप्रदेश)

विषय- राजभाषा पत्रिका **"लेखा संगम"** के **15वें** अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका **"लेखा संगम"** का **15वाँ** अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ । एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है । इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक है, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ हमारे विचार से प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	शशांक त्रिवेदी	किस्सा बीते दशक का
2.	डॉ. नमिता चंद्रा	मुक्ति

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

(दीपक कुमार दास)
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/राजभाषा

दूरभाष सं -0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

पाठकों के पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

पत्रांक: हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2018-19/174
दिनांक: 29.07.2021

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-
प्रथम एवं द्वितीय, 20 सरोजनी नायडू मार्ग
पिन - 211001, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

विषय: हिंदी वार्षिक ई-पत्रिका "लेखा संगम" के पन्द्रहवें अंक की पावती के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी वार्षिक ई-पत्रिका "लेखा संगम" के पन्द्रहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक एवं मनमोहक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंको के लिए बहुत - बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'महालेखाकार भवन', कौलागढ़, देहरादून - 248195 'Mahalekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल/ E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in

---

दूरभाष Telephone- 2223251, 2225766, 2224812
फैक्स/ Fax 0612-2225977
तार Tele Gram | ACCOUNTS

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हिन्दी कक्ष/लेखा/पत्रिका-जवाब/2021-22/35
दिनांक 03/08/2021

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं हक०)-I, II
प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश।

विषय :- कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' के 15वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 20/07/2021 के द्वारा कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' के 15वें अंक का ई-संस्करण सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री नरेन्द्र कुमार का लेख 'प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का संरक्षण', श्री मनीष कुमार विश्वकर्मा का लेख 'नज़रिया' एवं सगीर अहमद सीद्दीकी की रचना 'ग़ज़ल' काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

वरीय लेखा अधिकारी,
(हिन्दी कक्ष)

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER AUDIT BOARD, BENGALURU -560001.

स.हि.प्रशा.-2021-22/ 64 **दिनांक**- 23.07.2021

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय - महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) -1,
प्रयागराज -

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई - पत्रिका "लेखा संगम" के 15 वें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मलित डॉ नमिता चंद्रा का लेख "मुक्ति", श्री अशोक कुमार का लेख "वाणी का ठीक ठीक उपयोग", श्री सतीश रॉय का लेख "कोरोना को हराना है ईम्युनिटी को बढाना है" आदि ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका की सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है| पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ|

धन्यवाद,

भवदीय

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

संख्या No. हिन्दी/ले०प०/पत्रिका/53/21-22/152

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit), Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800 001

दिनांक/Date : 03/08/2021

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी)-1
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश-211001

विषय- राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के 15 वें अंक का प्रतिभाव।

महोदय,

आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के 15 वें अंक की ई-प्रति मिली,सहर्ष बधाई एवं धन्यवाद। पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा को निरन्तर सशक्त करने में सफल है।इस अंक में संकलित सभी रचनाएँ अर्थ और शिल्प की दृष्टि से उत्तम हैं।इनमें रोचकता और पठनीयता का गुण भी विद्यमान है।इस अंक में संकलित "बुद्धिजीवियों का बसेरा:महालेखाकार कार्यालय" शीर्षक आलेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है,जो महालेखाकार कार्यालय,प्रयागराज की समृद्ध साहित्यिक,सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराता है।

"इसके अतिरिक्त "नारी सशक्तिकरण", "प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का संरक्षण", "कोरोना को हराना है,इम्यूनिटी को बढ़ाना है", शीर्षक सामयिक विषयों पर केंद्रित आलेख भी स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक है।

पत्रिका कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाने के अभियान को सफलतापूर्वक सम्पादित कर रही है।इसका भविष्य और उज्ज्वल हो इसी कामना के साथ समस्त सम्पादक मण्डल को पुन: शुभकामनाएं।

भवदीय

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

दूरभाष/Phone - 2221226, 2221941, 2223725, 2223194, 2500091, 2506283 ई.पी.ए.बी.एक्स./EPABX-2223757, 2228320
फैक्स/Fax : 0612-250 6223, 2506207 ई.मेल/E-mail-agaubihar@cag.gov.in पो० बॉक्स/P.B.No.-47

प्रधान महालेखाकार (लें० व ह०) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं० 4 व 5, सैक्टर 33–बी, चण्डीगढ–160020
टेलीफोन नं० 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं० 0172–2603824
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agacharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2021-22/87
दिनांक: 29.07.2021

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)-1,
प्रयागराज ।

महोदय,

विषय : राजभाषा हिंदी पत्रिका 'लेखा संगम' के 15वें अंक के सम्बन्ध में

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 20.07.2021 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका 'लेखा संगम' के 15वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री यश मालवीय का लेख 'बुद्धिजीवियों का बसेरा' एवं श्री सतीश राय का लेख 'कोरोना को हराना है- इम्युनिटी को बढ़ाना है' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है ।

इसके अतिरिक्त श्री प्रत्युष अवस्थी की कविता 'रे मन तूने दर्द जिया है', एवं श्री राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की कविता 'तेज़ाबी सोच' पठनीय हैं ।

इसके अतिरिक्त श्रीमती नमिता चंद्रा की कहानी 'मुक्ति', एवं श्री मनीष कुमार विश्वकर्मा की कहानी 'नजरिया' पठनीय है ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चण्डीगढ़-160036
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL(AUDIT)
PUNJAB
CHANDIGARH -160036

क्रमांक: हि.क./हिंदी पत्रिका समीक्षा/2020-21/247
दिनांक: 28.07.2021

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-1,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

विषय: कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के 15वें अंक का प्रेषण ।
संदर्भ: दिनांक 20.07.2021 का ई-मेल।

महोदय/महोदया

ई-मेल द्वारा संदर्भित पत्र एवं आपकी कार्यालयी पत्रिका **"लेखा संगम"** का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। आपकी ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय है। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ व मुद्रण विशेष रूप से सराहनीय है। इसके साथ ही छाया चित्रों एवं प्रेरणादायी विचारों का संकलन अति-उत्तम है। हिंदी भाषा विश्व भर में तेजी से प्रसारित हो रही है जिसका श्रेय हिंदी लेखकों के साथ- साथ हिंदी भाषी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशकों एवं कार्यालयों को भी जाता है। इसके अतिरिक्त आपकी पत्रिका मे संकलित डॉ.नमिता चंद्रा जी की रचना, 'मुक्ति' विशेष रूप से सहाहनीय है।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका **"लेखा संगम"** के उज्ज्वल भविष्य के लिए **"सुगंधा"** परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI

स.प्रनिलेप(के) /हिंदी अनुभाग/14-02/2020-21/60
दिनांक : 05.08.2021

सेवा में,

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
प्रथम एवं द्वितीय,
उत्तर प्रदेश,प्रयागराज-211 001

विषय : हिंदी पत्रिका " लेखा संगम " के पंद्रहवें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका लेखा "संगम" के पंद्रहवें अंक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ । धन्यवाद ।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय है।**'श्री शशांक त्रिवेदी'** कृत **'किस्सा बीते दशक का'** मनोरंजक, **'डॉ नमिता चंद्रा'** कृत **"मुक्ति"** हृदयस्पर्शी, श्री शिवम् कुमार कृत **'प्यारे बच्चे'** प्रेरणादायक एवं **'आकृति कुशवाहा'** कृत **'कोरोना की कहानी'** सराहनीय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) II महाराष्ट्र, नागपुर
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) II
MAHARASHTRA,NAGPUR
सिविल लाईन्स नागपुर 440 001
टेलीफोन नं 0712-2565161-67 फैक्स 0712-2560184
ई-मेल agaeMaharashtra2@cag.gov.in
वेबसाईट https://cag.gov.in/ae/nagpur/en
CIVIL LINES NAGPUR 440 001
Ph: 0712-2565161-67 Fax: 0712-2560184
Email: agaeMaharashtra2@cag.gov.in
Web: https://cag.gov.in/ae/nagpur/en

रा.भा.अ./20/जा.क.- 25
दिनांक : 11/08/2021

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-I, उत्तरप्रदेश
प्रयागराज

महोदय,

इस कार्यालय में आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम" का 15वाँ अंक प्राप्त हुआ है तदहेतु साधुवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ मनमोहक व साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका का बाहरी व भीतरी साज-सज्जा पत्रिका को विशिष्ट बना रहे है। पत्रिका में शामिल रचनाएं उत्कृष्ट है तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उसे बढ़ावा देने में अपना योगदान अवश्य प्रदान करेगी जो परिलक्षित हो रहा है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेख व कविताएं सरस, पठनीय एवं संग्रहणीय है। कार्यालय में सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका की शोभा बढ़ी है। पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की दशा व दिशा में सकारात्मक प्रयास परिलक्षित हो रहे है। इसके लिए हिन्दी परिवार को अभिनंदन ।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

वरिष्ठ लेखाधिकारी
राजभाषा अनुभाग

लेखा संगम

गद्य संगम

अधिवक्ता की बुद्धि

श्री रवीन्द्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाकार

मेरे नजदीक एक वकील साहब हैं। उनकी पत्नी बहुत दिनों से किसी बात पर नाराज़ थीं। जैसा कि अक्सर सभी लोगों के साथ होता है। अगर पत्नी मायके पक्ष के किसी रिश्तेदार के यहाँ चलने को कहे और किसी कारणवश न जाने पाये तो नाराज़, ससुराल पक्ष से कोई ज्यादा दिन के लिए आये तो नाराज़। खैर वकील साहब ने अपनी पत्नी के समक्ष एक प्रस्ताव रखा– बोले डार्लिंग, आज हमलोग कहीं घूमने चलते हैं और तुम्हारी पसंद का बढ़िया से बढ़िया होटल में खाना खाते हैं।

लॉकडाउन के कारण कई महीनों से घर पर कैद होने के कारण वकील साहब की पत्नी ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। वकील साहब बहुत होशियार थे। घर से जैसे ही दो किलोमीटर चले उन्होंने पत्नी से कहा डार्लिंग, तुम मुझे गोल गप्पे खाने में कभी नहीं हरा सकती हो। पत्नी ने तुरंत जवाब दिया, आजमाकर देख लो पता चल जाएगा। वकील साहब के बच्चे भी उन्हीं पर गए थे। बच्चों ने मम्मी को चढ़ाया, नहीं पापा आप मम्मी को कभी नहीं हरा सकते हैं। वकील साहब भी डींग मारने में कम नहीं थे। बोले बेटा, तुमलोग नहीं जानते हो कॉलेज टाइम में जब गोल गप्पे खाने का मुक़ाबला होता था तो मैं ही फर्स्ट आता था। मैंने एक बार सौ गोल गप्पे खाने का रिकॉर्ड बनाया था। बच्चे उछले, नहीं पापा आप झूठ बोल रहे हो। मुकाबले में तो मम्मी ही फर्स्ट आएगी। वकील साहब की पत्नी बोली तो मुक़ाबला हो जाए । वकील साहब ने दबे मन से कहा, नहीं, फिर कभी लेकिन पत्नी ने कहा, फिर कभी क्यों अभी क्यों नहीं। खैर बिना किसी ना–नुकुर किए वकील साहब तैयार हो गये। हाईकोर्ट हनुमान मंदिर के पास एक गुप्ता जी की चाट फुल्की की दुकान है, हमलोग भी कभी–कभार वहाँ पर चाट–फुल्की खा लेते हैं।

कंप्टीशन शुरू हुआ। वकील साहब बोले, गुप्ता जी हम दोनों को 100–100 गोल गप्पे खिलाओ। गुप्ता जी भौचक्के रह गये कि वकील साहब ज़िंदगी में कभी भी दस से ज्यादा गोल गप्पे नहीं खाये थे। आज कैसे सौ का आर्डर दे रहे हैं। खैर गुप्ता जी को क्या लेना–देना, उनको तो पैसे से मतलब था। कंप्टीशन शुरू हुआ गुप्ता जी गोल गप्पे खिलाना शुरू किये। वकील साहब धीरे–धीरे गोल गप्पे निगल रहे थे और उनकी श्रीमती जी दनादन गोल गप्पे खाये जा रही थीं। बच्चे भी मम्मी की तरफ थे। बोल रहे थे शाबास! मम्मी आज पापा को हराना है। पतिदेव को हराने में आज श्रीमती जी को बहुत आनंद आयेगा। इसलिए खाने की स्पीड को बढ़ा दिया। वकील साहब जब तक दस गोल गप्पे खाये, श्रीमती जी ने पचास पार कर दिया। श्रीमती जी को लग रहा था कि जब ये छात्र जीवन में 100 गोल गप्पे खा चुके है तो कम से कम 60–70 तो खा ही लेंगे लेकिन

वकील साहब अपनी औकात जानते थे। खैर किसी तरह 25 गोल गप्पे पार कर गये और उनकी श्रीमती जी 80 गोल गप्पे पार कर गयीं। बोली बस गुप्ता जी। गुप्ता जी बोले मैडम 100 का आर्डर था। कुछ तो और खाइये। श्रीमती जी 5–6 गोल गप्पे और खा गयीं। बच्चे मम्मी को शाबासी दे रहे थे। वकील साहब अपराधी की तरह सिर झुकाये खड़े थे और श्रीमती जी मंद–मंद मुस्कुरा रही थीं। वकील साहब बोले, गुप्ता जी कितना हुआ गुप्ता जी बोले सर दो–सौ मात्र। वकील साहब ने पैसा चुकाया और बोले डार्लिंग अब बताओ कि कहाँ चले वकील साहब की पत्नी बोली, ए जी! अब सिर्फ एक हाजमोला का पत्ता ले लो और हमलोग घर चलते हैं। वकील साहब ने कहा, नहीं, हमलोग अच्छे होटल में खाना खाने चलेगें। श्रीमती जी ने कहा, ना बाबा, फिर कभी। वकील साहब मन्द–मन्द मुस्कुराये और मन में ही सोचा कि होटल में पाँच हजार रुपये का बिल बनता लेकिन रु. 200 में ही निपटा आये। इसी को कहते हैं अधिवक्ता की बुद्धि। जीत गये तो वाह–वाह हार गये तो अपील। आखिर हार कर भी जीत एक अधिवक्ता की ही हुई।

लघुकथा – पिन

श्री अंकित निगम
सहायक लेखाधिकारी

"खट" की दो क्रमिक ध्वनियों ने पहले घर का मुख्य द्वार खुलने और फिर तुरंत ही बंद होने का आभास तो दिया किन्तु पुनः पूर्व जैसी ही शांति छा गई। यह अप्रत्याशित था, प्रतिदिन इस समय द्वार खुलते ही पूरा घर मानसी के मधुरिम स्वरों से गूंज उठता था और उसकी शैतानियाँ घर के बाकी सदस्यों को भी चीखने–चिल्लाने पर बाध्य कर देती थी पर आज मानसी बिना किसी आवाज़ के सीधे कमरे में चली गई। ऐसा पहली बार हुआ था। अतः मानसी की माँ का चिंतित होना स्वाभाविक था।

''मानसी, क्या हुआ बेटा ? उदास हो ?''

''कुछ नहीं माँ, बस ऐसे ही।''

माँ के प्रश्न का बड़े रूखेपन से जवाब दिया मानसी ने, लेकिन माँ तो माँ है, उसे तो अपनी बिटिया के परिवर्तित व्यवहार का कारण जानना ही था, अतः फिर पूछा....

''कहीं चोट–वोट लगी है क्या ? या फिर आज अमन और उसके साथियों से हार के आयी हो?''

''हम्म''

मानसी ने बहुत मद्धिम स्वर में उत्तर दिया और माँ की गोद में सिर रख दिया, माँ ने भी बड़े प्यार से बेटी के सिर पर उँगलियाँ फेरते हुए कहा– ''ये तो खेल का हिस्सा है बेटा, कोई जीतता है तो कोई हारता है, इसमे ऐसे मुँह लटकाने वाली क्या बात है.... और वैसे भी तू रोज़ जीतती है अमन से, आज वो जीत गया तो कौन–सा पहाड़ टूट गया।''

माँ के शब्द मानसी के कानों में जा तो रहे थे पर दिमाग में बड़ी बुआ की साल भर पहले कही बातें गूंज रही थीं–

''कल से तेरा कबड्डी खेलना बंद, एक तो लड़कों वाले खेल खेलती है ऊपर से लड़कों के साथ खेलती है, कोई लाज शर्म तो है ही ना इस लड़की को, अरे खेलना ही है तो लड़कियों के साथ खेला कर।''

''पूरे गाँव में गिन कर पाँच लड़कियाँ खेलती हैं कबड्डी तो क्या ढाई–ढाई की टीम बनाकर खेलें और वैसे भी लड़कों के साथ खेलने में बुराई क्या है।'' मानसी ने भी बुआ की तरह ही मुँह बनाते हुए जवाब दिया था।

''आठवीं जमात में आ गई है पर अकल ढेले भर की नहीं है इस लड़की में, अरे लड़का–लड़की में कुछ अंतर है कि नहीं, मानसी की अम्मा कुछ समझाओ अपनी लाडली को।''

बुआ की इस खरी–खोटी के बाद माँ ने भी मानसी को समझाने का प्रयत्न किया–"देखो बेटा, माना की

लड़का– लड़की में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए पर ऐसे खेल लड़कियाँ लड़कों के साथ नहीं खेलतीं।
किन्तु प्रत्येक तर्क मानसी के हठ के समक्ष व्यर्थ सिद्ध हुआ। मानसी का कबड्डी प्रेम न तो कम हुआ और न ही उसने खेलना बंद किया किन्तु आज.... आज मानसी को बुआ की कही हर बात का अर्थ अक्षरशः समझ आ रहा था। उसकी आँखे नेपथ्य में निहार रहीं थी और मन आज हुए घटनाक्रम में खोने लगा था।
मानसी के घर से चार मकान छोड़ एक कच्ची गली थी जिसपर मुड़ते ही पहला घर अमन का था। इस घर का वातावरण भी मानसी के घर जैसा ही था। यहाँ पर भी दो गुमसुम–सी आँखे सामने रखी किताब को एक टक निहार रहीं थी। वो किताब, जिसकी ज़िल्द हर तरफ से खुली हुई थी और बीच में काले स्केच पेन से सुलेख किया गया था–
नाम– अमन शर्मा
कक्षा– IX
विषय– नैतिक शिक्षा
अमन की माँ ने भी ठीक वही प्रश्न किया जो मानसी की माँ ने किया था– "क्या हुआ बेटा, उदास हो?" संभवतः हर माँ का हृदय अपनी संतान के हृदय से एक जैसा ही जुड़ाव रखता है। अमन, जो अभी भी मन से कहीं और ही था, ने प्रश्न का उत्तर प्रश्न से ही दिया, वो प्रश्न शायद उसके दिमाग में बहुत देर से ज्वार के समान हिलोरे मार रहा था– "माँ, हमें नैतिक शिक्षा की पुस्तक क्यों पढ़ाई जाती है?"
"ये कैसा प्रश्न है अमन"
"बताओ न माँ"।
अमन ने आशा भरी दृष्टि से देखा तो उसकी माँ ने उत्तर देने का प्रयास किया– "ताकि हम नैतिक मूल्यों को सीखें और उन्हें अपने जीवन में उतार सकें, पर तुझे क्यों जानना था"।
"बस ऐसे ही"। अमन की दृष्टि पुनः अपनी किताब पर टिक गयी, साथ ही माँ की भी।
"अरे इस किताब की जिल्द कैसे खुल गयी, सारी पिने निकाल दी, अब तेरे बाबूजी से फिर कहना पड़ेगा दफ्तर से स्टेपलर लाने को, पता है न तुझे कि वो कितना बिगड़ते हैं।
अमन की माँ बोल रही थी पर अमन की तंद्रा तो कहीं और ही थी। उसके अंतर्मन की गहराइयों में कुछ समय पूर्व घटा घटनाक्रम जीवंत हो रहा था। उसके कानों में एक ही आवाज गुंजायमान थी.....
"कबड्डी, कबड्डी, कबड्डी, कबड्डी,"
लयबद्धता के साथ कबड्डी के स्वर का उच्चारण करती हुई मानसी लड़कों के पाले में चहलकदमी कर रही थी, इस चाल के पश्चात लड़कों की हार लगभग तय थी क्योंकि पाले में अकेला अमन ही बचा था। बाकी लड़के पहले ही मर चुके थे (खेल से बाहर हो गए थे)। मानसी की चपलता को भांपते हुए अमन कभी बाएँ तो कभी दाएँ जाकर खुद को उसके स्पर्श से दूर रखने का प्रयास कर रहा था और दूसरी तरफ से दोनों दल अपने–अपने साथी के नाम का त्वरित उच्चारण कर रहे थे। प्रतिदिन विद्यालय की छुट्टी के बाद ये प्रतियोगिता

होती थी और ये सिलसिला पिछले पाँच वर्षों से अनवरत चला आ रहा था। पर कोई नहीं जानता था कि आज इस खेल में इन दो दलों के अतिरिक्त नियति भी अपने दांव दिखाने वाली थी। एक ऐसा दांव जिसमे सिर्फ हार ही होनी थी।

"भाई कैसे भी कर के इसे मार दे! अगर आज भी हार गए तो ये लगातार दसवीं हार होगी। कसम से बहुत बेइज्जती होगी"।

अमन के एक साथी ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा था। अमन को भी आज पराजय स्वीकार न थी किन्तु असंख्य प्रयासों के उपरांत भी मानसी ने उसकी उँगलियों को स्पर्श कर ही लिया और हिरणी के समान अपने पाले की तरफ मुड़ गयी। अब पराजय टालने का एकमात्र उपाय था कि अमन मानसी को उसकी स्वास उखड़ने तक अपने पाले में ही रोक ले। अमन ने मानसी को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया और यहीं नियति ने अपनी चाल चल दी। अमन का हाथ मानसी के कंधे के स्थान पर उसकी शर्ट के कॉलर के आगे वाले हिस्से पर जा कसा और एक तेज झटके से मानसी की शर्ट के बटन एक–एक कर अलग होते चले गए। स्थिति का आभास होते ही अमन ने सहसा अपने हाथ पीछे खींच लिये और मानसी जो कि लड़खड़ाकर गिर गयी थी, ने अपनी शर्ट को तेजी से लपेट लिया। क्षण भर में घटित हुई इस आकस्मिक घटना के कारण अचानक से ही सारे शोर ने सन्नाटे की चादर ओढ़ ली। कौन जीता! कौन हारा! अब इसकी किसी को परवाह नहीं थी। किसी ने ध्यान तक नहीं दिया कि मानसी पाले के इस पार गिरी या उस पार। स्थिति की जटिलता को भाँपकर मानसी की सहेलियों ने उसको घेर लिया था, उसके गालों पर अश्रुधारा स्पष्ट रूप से दिखने लगी थी। आज पहली बार उसे अपने लड़की होने की सामाजिक विवशता का अनुभव हुआ था। सभी लड़के सिर झुकाए खड़े थे और अमन को तो स्वयं में एक अपराधी सदृश्य अनुभूति होने लगी थी। सभी के चेहरों पर मानो बर्फ–सी सफेदी छा गई थी। चारो तरफ बस सन्नाटा व्याप्त था। सन्नाटे की इस चादर को बस्ता खुलने की एक मद्धिम ध्वनि ने हटाया। संभवतः अमन ने अपने अपराधबोध को कम करने का कोई मार्ग सोच लिया था। उसने अपने बस्ते से पहले एक किताब निकाली, फिर पेंसिल बॉक्स और बॉक्स से गोला प्रकार, इसके बाद बड़े ही सधे हाथों से उसने किताब की ज़िल्द में लगी एक पिन के मुड़ने वाले स्थान पर गोला प्रकार का नुकीला वाला सिरा फँसाया और पिन को सीधा करके बाहर निकाल लिया, इसी प्रकार एक–एक कर उसने ज़िल्द से सारी पिने निकाल लीं और उन्हें हाथ में लेकर मानसी की तरफ बढ़ गया। आँखें नीचे किए हुए उसने लड़कियों के घेरे में से अपने प्रवेश करने भर की जगह बनाई और सुबकती हुई मानसी के नज़दीक जा बैठा। उम्र का कोई और दौर होता तो शायद अमन ऐसा न कर पाता, शायद मानसी की सहेलियाँ उसे इस घेरे में आने ही न देतीं या शायद कुछ और होता लेकिन बचपने की समझदारियाँ भी नासमझ ही होती है और शायद इसी वजह से किसी ने भी उसे रोका नहीं। नज़दीक पहुँचकर उसने मानसी की शर्ट के निचले हिस्से के दोनों सिरों को

एक के ऊपर एक रखा, उसमें अंगूठे की सहायता से पिन फँसाई और उन्हें पीछे से मोड़ दिया। दोनों में कोई संवाद तो नहीं हुआ पर मानसी ने उसे रोका भी नहीं। शायद अमन की तरह ही उसे भी आभास था कि वो ऐसी खुली शर्ट के साथ घर नहीं जा सकती थी। मानसी के शरीर को स्पर्श किये बिना अमन ने धीरे–धीरे उन पिनों से उसकी शर्ट को ठीक वैसे ही बंद कर दिया जैसे वो बटन से बंद थी।

सभी लड़कों ने इधर–उधर बिखरे बटन उठाकर मानसी की एक सहेली को दिए, फिर उसकी सभी सहेलियाँ उसे लेकर वहाँ से चली गयीं। सम्पूर्ण प्रकरण में वहाँ की संवादहीनता बनी रही किन्तु उस शांति ने भी कई विचारों के आदान–प्रदान कर लिए जिसमें इस खेल के स्थायी समापन की मूक घोषणा भी थी। कुछ क्षण पश्चात् जब लड़के शून्य से बाहर आएं तब अमन की दृष्टि अनायास ही उस पुस्तक पर पड़ी जिसकी पिन उसने निकाली थी, वो पुस्तक नैतिक शिक्षा की थी। आज बिना किताब खोले ही उसने जीवन की नैतिकता के एक अमूल्य पाठ को पढ़ा था जिसकी सीख आजीवन उसके साथ रहने वाली थी।

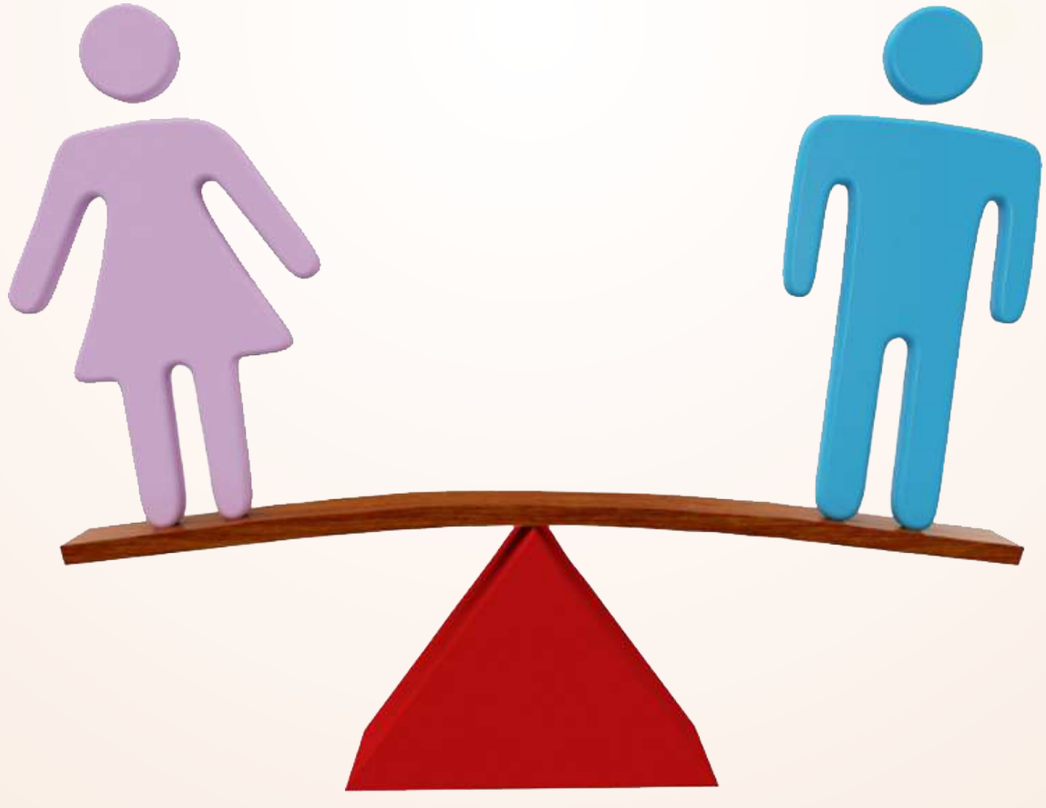

सफ़र

श्री ज्ञानेन्द्र गुप्ता
डी. ई. ओ.

प्रकृति में आने के बाद से ही सफर की शुरुआत हो जाती है और यह प्रक्रिया ईश्वरीय प्रबल शक्ति से नित्य प्रेरित होकर उसमे समाहित होने तक चलती रहती है। इसी प्रक्रिया में सफर एक कहानी है।

बात उस समय की है जब उसे अपने बाल्य अवस्था में सपने आने शुरू हुए थे। प्रत्येक रात्रि जब वो दिन की थकान को दूर करने बिछावन पर जाता तो उसकी आंखे चंद मिनटों में बंद हो जाती एवं तब सफर की शुरुआत होती। उसे बिजली की भांति स्वप्नों की रूपरेखा बनती एवं सहसा मिटती मालूम पड़ती। शुरू में तेज स्वप्नों की तरंगों में भविष्य में घटित होने वाले कृत्यों की झुलझुलती अस्पष्ट परछाई दिख पड़ती थी। एक राह दिखाई देता, जिसका कोई अंत नहीं मालूम पड़ता। प्रत्येक स्वप्न में इस राह में आने वाले हलचलों, पात्रों एवं आने वाले कल का परिचय होता है।

बचपन में स्वप्नों का सफ़र काफी आकांक्षाओं एवं हृदयस्पर्शी था। लुढ़कते, गिरते संभलते वह अब चलना सीखा था, जीवन के शुरूआती सफर में माँ ने उसे चलने के साथ न जाने कितने गूढ़ मर्म व सत्य से अवगत करा दिया था, जिससे उसका आने वाला मुश्किल सफर कुछ हद तक आसान होने वाला था। एक गुरु सदृश्य माँ ने उसे बचपन से ही इस हद तक काबिल बनाने की कोशिश की कि वह असमय, विषमयकारी, एवं जीवन जगत के नाटकीय चरित्र में अपने पात्र को कुशलतापूर्वक निभा पाये। परिवर्तनशील समय के साथ–साथ उसका विकास हुआ अब वह थोड़ा चेतनशील व विवेकशील हो गया था।

इसके आगे सफ़र आगे बढ़ते गया। किताबों, स्कूलों, खेल–खलिहान, सामूहिक पारिवारिक ढांचे एवं सामाजिक रीतिरिवाज को समझने में सहायक भूमिका निभायी। आदर्शवादी विचारों के धरातल पर अपनी पहचान खोते देख उसे तार्किकता का पहला बोध होता है। उसकी प्रवृत्ति थोड़ी संशयकारी हो जाती है एवं किताबी ज्ञान को व्यवहारिकता से मेल न खाते देख उसका हृदय विषाद से भर जाता है।

यह समाज को क्या हो गया है, वक्तव्य एवं लेखन उत्कृष्टता के चरम पर पहुँचा जान पड़ता है परंतु लोकव्यवहार इतना निकृष्ट एवं संशय से परिपूर्ण है कि वह अपने आप को कोसता एवं सफ़र को बंद करने की सोचता है। क्या यह उचित है, क्या उसके किताबी ज्ञानों का कोई महत्व नहीं, क्या वह नव तार्किकता के अभेध शक्ति से सामाजिक कु–कृत्य मनोवृति पर कुठाराघात नहीं करेगा, क्या समाज नित्य बुराइयों की बेड़ियों में बंधता चला जायेगा, क्या उसके स्वप्नों की आकांक्षाएँ अधूरी रह जायेगी, क्या सफ़र यही खत्म हो जायेगा?

कुछ परिवर्तन लाने की अपने असफल प्रयासों से वह निःशब्द, निराश मन से अपने आप को ढूंढता गुरु की खोज में चल पड़ता है।

यह खोज सफ़र में आगे की निर्णायक भूमिका निभाने वाला है। तथाकथित आदर्शवादियों एवं धर्मवेत्ताओं से तीक्ष्ण प्रश्न पूछे जाने वाले हैं। सफर रोमांचक व समाज को आईना दिखाने वाला ही है। एक अल्पज्ञानी के सामने उन तथाकथित ज्ञानियों का ज्ञान से साक्षात्कार होने वाला है। स्वप्नों के सफ़र का वास्तविक रूप सभा में पदार्पण होने वाला है। आज उसके गुरु सदृश्य माँ की सीखों का इन बुद्धिजीवियों से सामना होने वाला है। उसके स्वप्न का सफ़र हम सब का है जो आडंबरी समाज से मतविवेध रखते है। सफर आगे बढ़ता है, एक–एक से इनका साक्षात्कार होना शुरू होता है। प्रश्नों का सिलसिला शुरू होता है क्या "आदर्श समाज की कल्पित परिभाषाओं के उच्च मानकों से जाना जायेगा? क्या अभिव्यक्ति की आजादी देश को बांटने का काम करेगी क्या लोकतान्त्रिक मूल्यों के संरक्षण के लिए उत्तरदायी मीडिया अपने कर्तव्यों से विमुख हो हास्य का विषय बनेगी, क्या जात–पात के नाम पर चुनाव लड़ते जायेंगे, क्या दहेज, भष्टाचार, आदि बुराइयाँ पनपती रहेंगी, क्या लोकतंत्र के स्तंभ अपनी मर्यादा के प्रतिकूल कृत्यों से अपने–आप को खोखला करते रहेंगें, क्या महिलाओं का सशक्तिकरण, आदर्शवादिता का परिचायक मात्र रहेगा, क्या पिछड़ा समाज हासिए पर पूरा जीवन व्यतीत करेगा, क्या विश्वगुरु की मर्यादा भारत पुनः स्थापित करने का प्रयास करेगा। क्या हमारा मतविवेध भारत को सशक्त करने के काम आएंगे, क्या बुद्धिजीवियों के वक्तव्य व कलम लोकहित एवं जन कल्याणकारी नीतियों के लिए काम आएंगे, क्या सब मिलकर भारत की बात करेंगें। क्या गांधी, सुभाष व अनेकों बलिदानियों की यह धरती स्वयं की संकीर्ण मानसिकता को पीछे छोड़कर अपनी पहचान जात–पात के स्थान पर भारतीय कहने व कहलाने पर गर्वान्वित होगी आदि।

ऐसे अनेकों प्रश्नों का न उत्तर पाकर, वह कुछ परिवर्तन लाना चाहता है, समाज को सामाजिकता का आत्मबोध करने का प्रयास करता है। अत्यंत प्रयास के बाद आशातीत सफलता न मिलते देख उसे ज्ञात हो जाता है कि लोकतंत्र में सबको साथ लिए बिना मूल लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित नहीं किया जा सकता है ।

इसी बीच शत्रु देश का वाह्य आक्रमण देश पर होता है एवं आंतरिक एवं बाह्य व्यवस्था से उभरे द्वंद्वों से उसका हृदय अशांत एवं विचलित हो उठता है। आँख भर आती है, बचपन के स्वप्नों सा रूपरेखा व असमंजस में अपने आप को पाकर कुछ देर वह चुपचाप, ध्यान केंद्रित करता है।

सहसा उसे माँ की वो बात याद आती है "देश की सुरक्षा सर्वोपरि है। देश रहेगा तो आंतरिक कलह को बाद में ठीक कर लेना" उसका ध्यान टूटता है अब वह सेना के लिए आकस्मिक भर्ती में भाग ले अव्वल स्थान प्राप्त करता है।

आज दिन भर के प्रशिक्षण के बाद वह बिछावन पर लेटा था कि उसे आज फिर से स्वप्नों की रूपरेखा

बनती दिखाई मालूम पड़ती है। आज भी बिजली की भांति गर्जना हो रही थी, किन्तु उसका शरीर अविचलित होकर एक झुलझुलाते रूप से आ रही आवाज को एकाग्रता से सुनने में मगन था, ध्वनि की तरंगों में एक अदभुत शक्ति का आभास हो रहा था जो उसके वीर पूर्वजों की यशगाथा का महिमा मंडित कर रही थी। आँखें एकटक हो कर सूर्यपूंज समान उस रूपरेखा को आकार देने की कोशिश कर रहा था।

इसी बीच उसका हृदय स्पंदन पवन की गति की भांति हो चला, हाथ–पाँव काँपते हुए मानो आगे बढ़कर उस आभा का साक्षात्कार कर आलिंगन करना चाहता हो। अचानक वो बोल उठता है, मैंने आपको पहचान लिया, हे माँ भारती, माँ....माँ.... मै आ रहा हूँ, तेरे पीछे इन दुष्टों को मारने माँ मैं आ रहा हूँ, तुम कुछ पल इंतजार करो.....माँ मैं आ रहा हूँ... वह सपूत घोर बिजली जा गर्जना करने लगता है, भारत माता की जय! जय माँ भारती.... इसी गर्जना से साथ में सोये साथी की नजर उस पर पड़ती है, उसके मुँह से भारत माता की जय! की घोष करने लगता है.... हर हर महादेव! वो आँख मींचता अपनी बंदूक ढूढ़ता है, फिर से जोर से गर्जना करता है, इससे सभी बैरक के सैनिकों की नींद खुलती है और सभी आधी नींद में ही भारत माता की जयकारे लगाने लगते है.... अपना–अपना बंदूक संभालते हैं।

थोड़े समय बाद सबकी नजर थर्थराते सोये उसके शरीर पर पड़ती है। सभी मिलकर उसे उठाते हैं, वह भारत माता की जयकारे लगाते उठ खड़ा होता है। सभी एक दूसरे को देखते है और उससे पूछते हैं, भाई तूने स्वप्न में क्या देखा, वह कुछ देर चुपचाप रहा.... फिर साथियों ने पूछा भाई बताओ न तुमने क्या देखा। कल के युद्ध के बारे में देखा क्या, बताओं न चुप क्यों हो बोलो। वह एक गहरी सांस अंदर लेते हुए मुस्कुराया और बोला साथियों अब सब कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा है। बगल में बैठे एक साथी ने पूछा इसका क्या मतलब, वो बोला स्वप्नों की रूपरेखा।

सुबह हो चुकी थी, सायरन की आवाज सुनते ही सब अपने–अपने दैनिक क्रियाओं के लिए सफ़र के रहस्य का मन में उदभेदन की कोशिश करते, निकल पड़े। सभी कैंटीन में बैठे सब जलपान कर रहे थे, इसी बीच एक सैनिक आकर बोलता है "कैप्टन साहब ने सबको तुरंत एकत्रित होने के लिए आदेश दिया है"। एक सैनिक बोल उठता है, भाई क्या हुआ, वो बोलता है हालात ठीक नहीं है, हमने कुछ भाइयों को खो दिया है.... ओ अपने आँसुओं को छिपाते, अपने–आप को संभालते बाहर निकलता है। सभी आधा खाये, बाहर कैप्टन के पास उपस्थित होते है।

कैप्टन– "साथियों दुश्मनों ने हमारे जवानों को मार दिया है। हमें आज युद्धस्थल के लिए कुछ करना है। जो आना चाहता है एक अलग पंक्ति में आकर लग जाये। किसी पर जोर जबरदस्ती नहीं है। परंतु साथियों हम सबसे बहुत भाग्यशाली हैं जो माँ भारती ने यह अवसर दिया है। हम उन लोगों से अलग है जो देश में रहकर देश को लूटते है। हमें उन कुटिल ज्ञानियों से भी विपरीत स्वभाव रखते है जो कुतर्क पर जाति एवं

संप्रदाय आदि अवगुणो को देश की स्वाभिमान एवं मर्यादा के स्थान पर प्राथमिकता देते है। साथियों हम सीमित अभिव्यक्ति की आज़ादी से देश की रक्षा का कार्य करते हैं। हमें गर्व होना चाहिए की हम विलक्षण है, हमारी एक जाति है, हम एक माँ भारती की संतान है। हमारे ख़ून में वफ़ादारी है, हम वीर बलिदानियों की संतान है। हम अजेय हैं, अपने पुरुषार्थ को जगाओ यह देश हमारा है, इससे हमारी सर्वस्व पहचान है। "आओ मिलकर वार करें सरहद से दुश्मनों को मार भगायें। आओ मिलकर एक बहुप्रतीक्षित सफ़र की शुरुआत करें। आओ सफ़र की शुरुआत करें।

"है मंजिल दूर नहीं,
हौसले से कुछ असंभव नहीं,
आओ वीरों सिंहनाद करो,
एक–एक, सौ दुष्टों का संहार करो।
है सफर की अनुपम बेला,
हे! सपूत उठ खड़ा हो,
रण कौशल ऐसा दिखलाओ,
दुष्टों के बहते रक्त से,
काली को तुम इठलाओ,
आओ मिलकर, सफर में,
दुश्मनों को मार भगाओ।

कैप्टन साहब के उक्त पंक्तियों के बोलते ही सब भारत माता की जय! के जयकारे लगाने लगे। वह व सभी सैनिक "सफर" से परिचित हो चुके थे। सैनिकों में सहसा सोयी हुई वीरता एवं आत्मविश्वास का विद्युत की गति की भांति तेज़ संचार हो गया।

कैप्टन सहित सभी सैनिक कुछ करते है। रास्ते में एक सैनिक संकोच करते हुए कैप्टन से बोलता है साहब मैं एक बात पूंछू। कैप्टन ने मुस्कराते हुए बोला अब लौटने का कोई विकल्प नहीं, सभी सैनिक मुस्कुराने लगते हैं, जैसे उनके अंदर भय का कोई अंश मात्र नहीं। फिर प्रश्न पूछने वाले सैनिक ने अपने आप को थोड़े दबे आवाज़ में बोला, "सफ़र" के बारे में क्या आपने भी स्वप्न देखा था ? कैप्टन, स्वप्न कैसा स्वप्न? सैनिक ने रात की बात बताते हुए, उसकी ओर इशारा किया। कैप्टन ने कहा, क्या तुमने देख लिया? अद्भुत, अकल्पनीय, यह सफ़र अनमोल है।

सभी युद्धस्थल के समीप कैम्प के पास पहुँचते हैं। एक अधिकारी कैप्टन को वस्तुस्थिति से अवगत कराने के बाद कमान सौंपते हैं। सैनिक को अवगत कराया जाता है कि एक घंटे बाद अर्थात् शाम 5 बजे

युद्धस्थल के लिए जाना है। समयानुसार युद्धस्थल पहुँचकर, कैप्टन युद्ध की कमान संभालता है। युद्धस्थल पर सभी अपना रण कौशल दिखलाते हैं, घंटो बाद युद्ध की स्थिति पक्ष में आती दिखाई पड़ती है। तभी अचानक एक गोली उसके सीने में जा लगती है, आँखें बंद हो जाती है वह मूर्छित होकर गिर पड़ता है। एक सैनिक दुश्मन सैनिक को मार गिराता है। युद्ध जीता जा चुका है, कैप्टन को उसके घायल होने की सूचना मिलती है। सब झटपट उसे उपचार के लिए ले जाते हैं। उसके अचेतन मन में बीते कल का स्वप्न याद आता है, उसे आभास होता है कि माँ भारती उसके पास आ गई हैं, सिर को अपने गोद में लेकर सहला रही है। वो बड़े चैन से सो रहा है, अपने अंतिम सफ़र को अनुभव कर रहा है। वह जो आज परमतत्व को पाने वाला है, वह उत्साहित भी है, परंतु देश की आंतरिक बुराइयों को ठीक न करने का अफ़सोस भी अनुभव कर उसके आँखों से आँसू आ रहे हैं। माँ भारती के आश्वासन "यह देश तुम्हारे सपनों जैसा हो जाएगा, इसकी वैभव अपनी पुरानी ख्याति को प्राप्त करेगी। लोग कर्म से भी आदर्शवादी नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएंगे। भारत फिर से विश्वगुरु की अपनी पहचान बनायेगा"। इतना सुनते ही उसके श्वास की गति अत्यंत तेज हो जाती है, साथी सैनिक व्याकुल हो उठते है, उन्हें अनुभव हो उठता है, आज यह बहादुर सफर का अंत करके ही मानेगा। सहसा उसके दिल की धड़कन रुक जाती है, वह परम गति को प्राप्त करता है। उसके सफ़र का अंत हो जाता है। चारों ओर सन्नाटा छा जाता है। तभी कैप्टन बोल उठता है, तू वीर सपूत माँ भारती का अमर रहे! अमर रहे! सब शीश नवां कर विनती कर बोलते है, माँ भारती हमें भी अपने सफर के अंत में अपने आँचल तले स्थान दें।

सफ़र किसी अभीष्ट प्रयोजन के लिए की गयी यात्रा है। जन्म से शुरू होकर अंत में पंचतत्त्व में विलीन होने का दूसरा नाम सफ़र ही है। लेकिन कोई अपने सफ़र का अंत देशहित, सुरक्षा में करे, यह अनुकरणीय एवं जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। वीरों को शांति मिले इसके लिए जरूरी है कि देश के आंतरिक मतभेदों को दूर करते हुए, एक अखंड भारत एवं सशक्त भारत का निर्माण किया जाय। यही बलिदानियों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

एक अनोखा इंसान

श्री ओम कुमार मौर्या
पुत्र- श्री हरिश्चंद्र मौर्या, वरि. लेखाकार

एक बादशाह की आदत थी कि वह भेस बदलकर लोगों की ख़ैर–ख़बर लिया करता था। एक दिन अपने वज़ीर के साथ गुज़रते हुए शहर के किनारे पर पहुँचा तो देखा एक आदमी गिरा पड़ा है। बादशाह ने उसको हिलाकर देखा तो वह मर चुका था। लोग उसके पास से गुज़र रहे थे। बादशाह ने लोगों को आवाज़ दी लेकिन कोई भी उसके नज़दीक नहीं आया क्योंकि लोग बादशाह को पहचान न सके। बादशाह ने वहाँ रह रहे लोगों से पूछा, क्या बात है इसको किसी ने क्यों नहीं उठाया लोगों ने कहा, यह बहुत बुरा और गुनाहगार इंसान है।

बादशाह ने कहा, क्या ये इंसान नहीं है? और उस आदमी की लाश उठाकर उसके घर पहुँचा दी तथा उसकी पत्नी को लोगों के रवैये के बारे में बताया। उसकी पत्नी अपने पति की लाश देखकर रोने लगी और कहने लगी, मैं गवाही देती हूँ। मेरा पति बहुत नेक इंसान है। इस बात पर बादशाह को बड़ा ताज़्जुब हुआ। कहने लगा, यह कैसे हो सकता है? लोग तो इसकी बुराई कर रहे थे और वो इसकी लाश को हाथ तक लगाने को भी तैयार न थे।

उसकी पत्नी ने कहा, मुझे भी लोगों से यही उम्मीद थी। दरअसल हक़ीकत यह है कि मेरा पति हर रोज़ शहर के शराबखाने में जाता, शराब खरीदता और घर लाकर नालियों में डाल देता और कहता की चलो कुछ तो बोझ इंसानों से हल्का हुआ। और रात में इसी तरह एक बुरी औरत यानि वैश्या के पास जाता और उसको एक रात की पूरी कीमत देता और कहता कि अपना दरवाजा बंद कर ले, कोई तेरे पास न आये और घर आकर कहता खुदा का शुक्र है, आज उस औरत और नौजवानों के गुनाहों का कुछ बोझ मैंने हल्का कर दिया। लोग उसको उन जगहों पर जाता देखते थे। मैं अपने पति से कहती याद रखो जिस दिन तुम मर गए, लोग तुम्हें नहलाने तक नहीं आयेगें, न ही तुम्हारी अर्थी को कंधा देने आयेंगे। वह हँसते और मुझसे कहते कि घबराओ नहीं, तुम देखोगी कि मेरी अर्थी बादशाह और नेक लोग उठायेंगे। यह सुनकर बादशाह रो पड़ा और कहने लगा, मैं बादशाह हूँ। कल हम इसको नहलायेंगे, इसकी अर्थी को कंधा देंगे और इसका दाह–संस्कार भी करवाएंगे।

आज हम बज़ाहिर कुछ देखकर या दूसरे से कुछ सुनकर अहम फैसलें कर बैठते हैं। अगर हम दूसरों

के दिलों के भेद जान जाएं तो हमारी जुबाने गूंगी हो जाय। किसी को गलत समझने से पहले देख लिया करें कि वह ऐसा है भी कि नहीं और हमारे सही या गलत कहने से सही या गलत नहीं हो जायेगा और जो गलत है वो सही नहीं हो जायेगा। हम दूसरों के बारे में फैसला करने में महज़ अपना वक्त जाया कर रहे हैं.....

बेहतर ये है कि अपना कीमती वक्त किसी की बुराई करने की बजाय अच्छी सोच के साथ परोपकार, परमार्थी कार्यों में लगाया जाए।

छठ महापर्व

श्री लक्ष्मण प्रसाद
वरिष्ठ लेखाकार

छठ महापर्व हिन्दुओं का प्रसिद्ध त्योहार है। यह एक त्योहार न होकर, त्योहारों का एक समूह है, जो चार दिनों तक चलता है। मुख्य त्योहार कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के षष्ठी को मनाया जाता है। इसीलिए इस त्योहार का नाम छठ पड़ा है। यह त्योहार बिहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश के अलावा देश के अन्य हिस्सों के साथ–साथ नेपाल, मॉरिशस एवं अन्य देशों में भी उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। इस त्योहार में छठ माता की आराधना और सूर्य को अर्घ्य देने का विशेष महत्व है। इस पर्व की तैयारी बहुत ही श्रमसाध्य और सघन होती है। ऊषा और प्रत्यूषा सूर्य देव की दो शक्ति मानी जाती है जिन्हें यह समर्पित है और उन्हें अर्घ्य दिया जाता है।

चार दिनों तक चलने वाले इस त्योहार की शुरुआत पहले दिन नहाय–खाय से होती है। इस दिन गंगा या किसी स्थानीय नदी के पवित्र जल से स्नान करके खाना बनाया जाता है। इस दिन चने की दाल, लौकी की सब्जी और रोटी का सेवन किया जाता है। नहाय–खाय के बाद खाने में नमक का प्रयोग नहीं किया जाता है। दूसरे दिन को खरना के नाम से जाना जाता है। खरना के दिन व्रती महिलाएं प्रसाद बनाती हैं। खरना के प्रसाद में खीर बनाई जाती है। इस खीर में चीनी की जगह गुड़ का प्रयोग किया जाता है। शाम को पूजा के बाद इस प्रसाद को ग्रहण करते हैं। प्रसाद खाने के बाद लगभग 36 घंटे का निर्जला व्रत शुरू होता है। तीसरे दिन नदी किनारे छठ माता की पूजा की जाती है। पूजा के बाद डूबते हुए सूर्य को गाय के दूध और जल से अर्घ्य दिया जाता है। संध्याकाल में दिया जाने वाला पर्व का प्रथम अर्घ्य उनकी अंतिम किरण प्रत्यूषा को दिया जाता है। इसके साथ ही छठ का विशेष प्रसाद ठेकुआ और फल चढ़ाया जाता है। इस त्योहार के आखिरी दिन सूर्य के उगते ही सभी के चेहरे खिल उठते हैं। व्रत करने वाले पुरुष और महिलाओं के द्वारा उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। प्रातः काल का अर्घ्य सूर्य की प्रथम किरण ऊषा को दिया जाता है। सूर्य को अर्घ्य देने के बाद व्रत करने वाले लोग प्रसाद खा कर अपना व्रत खोलते हैं। इसके बाद सभी लोगों में प्रसाद बांटकर पूजा सम्पन्न की जाती है। यह व्रत पति की दीर्घायु, संतान सुख की कमाना और उसकी खुशहाली, पारिवारिक सुख समृद्धि तथा मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए किया जाता है। इस पर्व को स्त्री और पुरुष समान रूप से मनाते हैं। दीपावली के बाद से ही महिलाएं इस पर्व को लेकर तैयारियां शुरू कर देती हैं। सूर्य उपासना के बाद घाट पर दीपावली जैसा माहौल बन जाता है। इस पर्व का आयोजन मुख्यतः गंगा के तट पर होता है। गांवो में छोटे तालाबों और पोखरों के किनारे ही धूम–धाम से इस पर्व को मनाते हैं। छठ पूजा कथा के अनुसार छठ माता भगवान की मानस कन्या देवसेना बताई गई है। अपने परिचय में वे कहती हैं कि वह प्रकृति के छठवें अंश से उत्पन्न हुई है। यही कारण है कि उन्हें षष्ठी कहा जाता है।

सामाजिक महत्व– छठ पूजा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष इसकी सादगी, पवित्रता और लोक पक्ष है। भक्ति और आराधना से परिपूर्ण इस पर्व में बांस निर्मित सूप, टोकरी, मिट्टी के बर्तनों, गन्ने का रस, गुड, चावल और गेंहू से निर्मित प्रसाद और सुमधुर लोकगीतों से युक्त लोक जीवन की भरपूर मिठास का प्रसार करता है।

छठ गीत– छठ पूजा का एक आकर्षण छठ गीत भी है। व्रती महिलाएं 36 घंटे निर्जला व्रत के बाद भी यह गीत बड़े मनोयोग और उल्लास से गाती हैं जो कर्ण–प्रिय और आनंद देने वाले होते हैं। कुछ छठ के पारंपरिक गीत निम्नलिखित है–

1. काँच ही बांस के बंहगिया, बंहगी लचकती जाय.....
2. केवला जे फरेला घेवद से, ओह पर सुगा मेड़राय.....
3. चार चौखण्ड के पोखरवा, वो में कदम के गांछ
4. उग न सुरुज देव, घाईले अरघ के बेर.....

इन गीतों की ख़ासियत यह है कि यह केवल छठ पर्व के समय ही गाये जाते हैं। छठ पर्व और सूर्य देव के पूजा का उल्लेख भारत के दोनों महाकाव्यों रामायण और महाभारत में भी मिलता है।

रामायण– एक मान्यता के अनुसार लंका विजय के बाद रामराज्य के स्थापना के दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी को भगवान राम और माता सीता ने उपवास किया और सूर्यदेव की आराधना की। सप्तमी को सूर्यदेव के समय फिर से अनुष्ठान कर सूर्य देव से आशीर्वाद प्राप्त किया था।

महाभारत– महाभारत के एक वृत्तांत के अनुसार जब पांडव अपना सारा राजपाट जुए में हार गए तब द्रोपदी ने छठ व्रत रखा, तब उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण हुई तथा पांडवों को राजपाट वापस मिल गया।

छठ से संबंधित कई प्रचलित और पौराणिक कथाएं भी हैं जो ये साबित करती हैं कि छठ पूजा कितना महत्वपूर्ण है। इसके सभी व्रत धारकों को सुख सुविधाओं को त्यागना पड़ता है। इसके व्रत रखने वाले को जमीन पर एक कंबल या चादर बिछाकर सोना होता है। ये व्रत ज्यादातर महिलाएं करती हैं। वर्तमान समय में अब कुछ पुरुष भी यह व्रत करने लगे हैं।

छठ बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश का मुख्य त्योहार है और उनकी सांस्कृतिक गर्भनाल है। वे चाहे दुनिया के किसी भी कोने में रहे, छठ में अपने पैतृक घर आना चाहते हैं। इस त्योहार से ज्यादा उनके दिल को कुछ और नहीं छूता है। यह देश के अन्य प्रमुख त्योहारों– होली, दीपावली, दशहरा की तरह एक धार्मिक उत्सव भर नहीं है। यह परिवार तक जाने वाली एक डोर है, जिसे कोई छोड़ना नहीं चाहता है।

कोरोना के डर से पुरानी प्राकृतिक इलाज पद्धतियों पर लोगों का विश्वास बढ़ा

श्री सतीश राय
वरिष्ठ लेखाकार

इस देश में हजारों वर्ष पूर्व मनुष्यों का उपचार प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के माध्यम से होता था। इस पर कोई शोध (रिसर्च) न होने के कारण वर्तमान में यह पद्धति चिकित्सा क्षेत्र में बहुत पिछड़ गई। कोरोना वायरस के डर से लोगों को प्राकृतिक चिकित्सा में आयुर्वेदिक काढ़े ने इम्यूनिटी बूस्टर के रूप में सबका मन मोह लिया। जिसे देखकर पहले लोग नाक–मुँह बना लिया करते थें, कोरोना काल में वही अमृत लगने लगा। इसी काले काढ़े में लोगों को अपना रक्षक नज़र आने लगा। युवा पीढ़ी ने कभी सोचा नहीं होगा कि कोल्ड ड्रिंक्स, डिब्बा जूस, फ्रूट जूस, कोल्ड काफी जैसे पदार्थो को छोड़ सकते हैं लेकिन कोरोना काल ने यह संभव कर दिखाया।

कोरोना वायरस से बचाव में स्वास्थ के लिए क्या अच्छा है, लोगों को अब समझाने की जरूरत नहीं है। लोग अपनी इम्यूनिटी बढ़ाने वाले पदार्थो का सेवन करने लगे हैं।

भारत में पहले लोगों का उपचार प्राकृतिक तरीकों को अपनाकर होता था। 16वीं शताब्दी में जब भारत में चेचक की बीमारी फैली, उसमें एलोपैथ ने बढ़–चढ़ लाभ पहुँचाया। सन 1796 में चेचक की वैक्सीन आई और अंग्रेजों ने उस वैक्सीन से चेचक की बीमारी को काबू किया। तभी से लोग प्राकृतिक चिकित्सा व आयुर्वेद को छोड़कर एलोपैथ पर भरोसा करने लगे और वहीं से इसकी जड़े मजबूत हुईं।

वर्तमान में कोरोना के डर ने सभी कुछ बदल दिया है। जो सबसे अच्छी मुख्य चिकित्सा एलोपैथ में भी कोरोना का इलाज न होने से लोगों का हजारों वर्ष पुरानी उपचार पद्धतियों पर पुनः विश्वास जागा है। योग–ध्यान आयुर्वेद एवं अच्छे खान–पान तथा व्यायाम कर हम अपनी इम्यूनिटी बढ़ाकर स्वस्थ रह सकते हैं लेकिन हिंदुस्तान में कई अन्य उपचार पद्धतियाँ हैं जिन पर रिसर्च कर बिना औषधि खिलाये रोगों का उपचार हो सकता है। जैसे– वेदों में शब्द को ब्रह्म कहा गया है। शब्द और उनसे बने मंत्र विचार–शक्ति के परिचायक हैं। मंत्रों की एक ताकत असाध्य रोगों का इलाज करने में भी सक्षम है। मंत्र चिकित्सा में ऊँ शब्द बोलने से कौन–कौन सा रोग ठीक होता है; गायत्री मंत्र से कैसा उपचार कर सकते हैं; यज्ञ चिकित्सा से किस रोग से छुटकारा मिल सकता है; सूर्य चिकित्सा किन–किन रोगों में ज्यादा लाभ देता है; वहीं पर हाथ रखकर स्पर्श चिकित्सा से उपचार में कौन–कौन सा रोग ठीक हो सकता है; इसी तरह वायु चिकित्सा, अग्नि चिकित्सा, जल चिकित्सा इत्यादि जिसमें बिना औषधि खिलाये रोगों का सरल उपचार होता है। इन सभी उपचार पद्धतियों पर गहन रिसर्च की आवश्यकता है।

वर्तमान में कोरोना की वजह से मानसिक रोगियों की संख्या बहुत बढ़ गयी है। कारण यह है कि लोग

सोचते हैं कि उनकी लापरवाही के कारण अपने चले गये। अपने सगे–सम्बन्धियों को खोने का कसूरवार ख़ुद को समझते हैं। इसलिए वे हमेशा तनाव मे रहते हैं। इस कारण वे मानसिक रोगी बन रहे हैं। ऐसे में उन्हें प्राकृतिक उपचार के साथ–साथ स्पर्श ध्यान करने से उन्हें वास्तविकता का बोध होगा और वे स्वस्थ हो जाएंगे।

वर्तमान में डर एवं भय का वातावरण है। लोग भयंकर डरे हुए है। जो लोग कोरोना वायरस से ठीक होकर अस्पताल से घर आ रहे हैं, उनके अंदर अत्यधिक कमजोरी है जो 20 से 30 दिन में ठीक हो रही है। ऐसे मे तीसरी लहर की शंका जतायी जा रही है जिससे लोग भयंकर डरे हुए है। तो इसमें हमें घबराने के बजाय सजग रहने की जरूरत है। क्योंकि कोरोना से बड़ी बीमारी डर है। किसी भी बीमारी का डर एवं भय की नकारात्मक भावना ज्यों ही हमारे मन में आती है, हमारा दिमाग उसे ग्रहण करता है और उससे संबंधित लक्षण शरीर में पैदा कर देता है। क्योंकि हमारा दिमाग (मस्तिष्क) इतना शक्तिशाली है कि वह किसी भी बीमारी का इलाज भी कर सकता है और बीमारी पैदा भी कर सकता है। विज्ञान में जितने भी रिसर्च हैं, वह सिर्फ शरीर पर है। मन एवं आत्मा पर ध्यान नहीं दिया जाता।

मन को मजबूत बनाते हुए बिना डरे हमें अपनी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाले सभी उपाय करने चाहिए। जैसे परिवार में सभी लोग मौसमी फल, पत्तेदार हरी सब्जियाँ, पौष्टिक आहार लें। सभी लोग मन को स्वस्थ रखने वाले हल्के व्यायाम करें, बचाव के सारे उपाय करते हुए वह कार्य करें जिससे परिवार में ज्यादा से ज्यादा खुशियों का माहौल (वातावरण) बना रहे। यह खुशी चाहे भजन, फिल्मी धुन या किसी संगीत पर डांस ही क्यों न हो। ऐसे–ऐसे कार्य करें कि सभी लोग दिन में कई बार सभी लोग खुलकर खिल–खिला कर हँसे एवं प्रसन्न रहें।

शरीर मे प्रतिरोधक क्षमता की सबसे ज्यादा बढ़ोत्तरी प्रसन्न रहने एवं हंसने से होती है। हंसने से शरीर की माँसपेशियाँ, पीठ की व चेहरे एवं फेफड़े की माँसपेशियाँ बार–बार खिंचती हैं एवं शिथिल होती हैं। श्वास की गति बढ़ने से अधिक ऑक्सीजन प्राप्त होती है जिससे रक्त का संचालन बढ़ता है एवं शरीर में कार्बन–डाई–ऑक्साइड की मात्रा में कमी होती है। क्योंकि उन्मुक्त रूप से हँसने से मस्तिष्क में "न्यूरों ट्रांसमीटर" स्त्राव में बृद्धि होती है। हँसने के दौरान मस्तिष्क में आनंद प्राणदायिनी रसायन इंडोफ्रिन में वृद्धि होती है जिससे मस्तिष्क में दर्द सूचक तंत्र कमजोर पड़ते हैं। इस क्रिया से हमारे इम्यून सिस्टम बहुत मजबूत होते हैं। ज्यादा हँसने से शरीर की अधिक कैलोरी जल जाती है। वजन–मोटापा कम होता है, तनाव, मानसिक चिंता, डिप्रेशन से मुक्ति मिलती है। ज्यादा हँसने से शरीर में रोग– व्याधियों से लड़ने की क्षमता का विकास होता है जिससे वायरस एवं जीवाणु रोग से बचाव होता है। इसलिए कोरोना वायरस के किसी भी लहर से डरने की जरूरत नहीं है, उससे बचाव की जरूरत है जो हम अभी से अपनी एवं अपने बच्चों में प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर करनी है।

चुनौतियों का सामना करती आज की महिला

डॉ. नमिता चन्द्रा
सहायक लेखाधिकारी

"हिलते रहे हरे पत्तों से नन्हे हाथ तुम्हारे।
दफ़्तर तो जाना ही था, पापा क्या करते बेचारे।
बेटे, मुझे माफ़ कर देना, मिलना बांह पसार।"

हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि श्री मालवीय जी की रचना "नन्हें हाथ तुम्हारे" की यह कुछ पंक्तियाँ पढ़कर मन विचलित हो उठा। कविता तो कार्यालय जाते समय पापा के मन के विचारों का वर्णन करती है किन्तु मेरी आँखों के समक्ष अनायास ही प्रतिदिन सुबह अपने घर का चित्र जीवंत हो उठा। "मम्मा प्लीज आज आफिस मत जाओ ना", यह वाक्य कानों में गूंज उठा। एक कामकाजी महिला के जीवन का बेहद कठिन पल होता है जब वह अपने अबोध बच्चे को छोड़कर कार्यालय के लिए निकलती है। उस समय मन में एक ग्लानि घर कर जाती है कि मैं अपने बच्चे को समय नहीं दे पा रही हूँ। हम तो घर से निकल आते हैं किन्तु पीछे बच्चों की आँखें चिपक–सी जाती है। शायद वह भी इंतज़ार करते हैं कि किसी दिन माँ जल्दी वापस लौट आए।

एक कामकाजी महिला होने के कारण मैं इस कविता को कुछ अधिक ही गहराई से महसूस कर पा रही हूँ। जीवन की आपाधापी, भौतिकता एवं सुख–सुविधा की अंधी दौड़ में हम सब बस भाग रहे हैं। कटु सत्य तो यह है कि आज के समय में विवाह हेतु सभी एक कामकाजी लड़की चाहते हैं क्योंकि लड़की यदि नौकरी पेशा में होगी तो घर में दो पैसे अधिक आएंगे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बेटा–बेटी को एक समान मानते हुए दोनों को उच्च एवं समान शिक्षा प्रदान करना आम है। आज दोनों के लिए समान अवसर है जिससे लड़कियों के समक्ष एक सुनहरा भविष्य पंख पसारे रहता है।

यह समानता, शिखर को छूने की आकांक्षा प्रशंसनीय है तथापि एक सार्वभौमिक सत्य जिसे हम सब जानकर भी स्वीकार नहीं करना चाहते कि अंततः गृहस्थी की बागडोर तो स्त्री को ही संभालना है। करियर में सफलता के विभिन्न आयामों को छूने के साथ ही उसे एक पत्नी एवं माँ भी बनना है। पत्नी के रूप में तो गृहस्थी की डगर सहज एवं सरल हो जाती है यदि पति समझदार एवं सहयोग करने वाला हो, किन्तु माँ..... एक छोटा सा शब्द जिसमें असंख्य भाव एवं जिम्मेदारियाँ समाहित होती है, वह पद प्राप्त करते ही घर एवं कार्य स्थल दोनों को संभालने की राह अति दुरूह हो जाती है। नौकरीपेशा महिला अधिकतम दो वर्ष विभिन्न अवकाश आदि लेकर बच्चे को थोड़ा बड़ा कर लेती है लेकिन बच्चे को तो हर पल माँ की आवश्यकता होती है।

न जाने कितने अवसर आते हैं जब बच्चों को माँ के साथ की आवश्यकता होती है किन्तु वह वहाँ नहीं होती है। और फिर धीरे–धीरे बच्चे भी अकेले रहना सीख जाते हैं।

कहते हैं कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं ठीक उसी तरह कुछ मामलों में महिलाओं का नौकरीपेशा में होना बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में सकारात्मक भी सिद्ध होता है। बच्चे धीरे–धीरे स्वयं प्रयास करना सीखने लगते हैं तथा हर छोटी–बड़ी बात के लिए माँ–पिता पर निर्भर नहीं रहते। वह जल्दी ही आत्मनिर्भर एवं अधिक समझदार हो जाते हैं छोटी–मोटी कठिनाइयों का हल वह स्वयं ही निकालना सीख जाते हैं। यह गुण उनके भविष्य के लिए बेहद लाभदायक सिद्ध होता है। आज के समय में पति–पत्नी दोनों का काम करना समय की मांग है। बढ़ती हुई महंगाई के दौर में दोनों की आय से एक अच्छा एवं समृद्ध जीवन व्यतीत करना सरल हो जाता है। अब इस स्थिति में माँ को अपने बच्चों को किस तरह से संभालना है, उसे अच्छे संस्कार किस प्रकार देने हैं यह एक कठिन चुनौती है जिसका सामना हमें हर पल करना पड़ता है। प्रत्येक कामकाजी महिला को दोहरे उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना पड़ता है। कार्य स्थल की जिम्मेदारियों के साथ उसे अपने बच्चों को एक जिम्मेदार नागरिक बनाने हेतु भी कठिन श्रम करना पड़ता है। कम समय में किस प्रकार उनमें अधिकाधिक संस्कार एवं अच्छे गुणों का विकास करे इसके लिए अथक प्रयास करने होते हैं। अतएव देखा जाय तो कामकाजी महिलाओं का जीवन अत्यंत दुरूह एवं जटिलताओं से भरा होता है।

कदाचित इसीलिए नारी को शक्तिस्वरूपा कहा गया है क्योंकि माँ ही तो है जो कार्यक्षेत्र से जुड़ी तमाम उलझनों एवं परेशानियों के बाद भी बच्चों की छोटी से छोटी फ़रमाइशों को मुस्कुराकर पूरा करती है और बदले में बच्चों की एक मुस्कान दिनभर की सारी थकान मिटा देती है। गृहस्थी में स्त्री के रोल पर तो कुछ भी कहना, सुनना या लिखना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है। उसके योगदान को नकारा नहीं जा सकता और कामकाजी महिलाओं के संदर्भ में तो यही कहा जा सकता है कि तमाम दुश्वारियों के बाद भी वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का प्रयास करती है। इस क्रम में उसे अपनी छोटी–छोटी आकांक्षाओं तथा खुशियों का त्याग भी करना पड़ता है। हो सकता है कि किसी समय बच्चों को पीछे रखते हुए कार्यस्थल की जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देना पड़े। इस परिप्रेक्ष्य में मैं श्री यश मालवीय जी की उक्त कविता की पंक्तियाँ पुनः लेना चाहुँगी.....

तुम्हें चूमना चाहा भी तो घड़ी सामने आयी,
कल की खुली अधूरी फाइल पड़ी, सामने आयी।

.....

बेटे, मुझे माफ कर देना, मिलना बांह पसारे
किलकारी में खो जाएंगे, सारे आँसू खारे।

सच है कि नौकरी, घर एवं बच्चों के बीच सामंजस्य बनाकर सबको खुश करते हुए चलना कितना

कठिन होता है। नौकरी करते हुए बच्चों को सही मार्गदर्शन देना, उन्हें पढ़ा–लिखाकर एक सफल इंसान बनाना, एक बहुत बड़ी चुनौती होती है। एक महिला को इसके लिए कितने प्रयास करने पड़ते हैं, यह वही समझ सकती है। दूसरों को उसके जीवन की चमक एवं सुख–सुविधाएं तो दिखती हैं, उन्हें प्राप्त करने में किए गए त्याग एवं कठिनाइयाँ नहीं। कामकाजी महिला अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करते हुए परिवार के प्रेम एवं अपनापन से भरे भाव के सहारे खुशी से अपना जीवन यापन करती है। उनकी यह मेहनत, यह साधना सफल हो जाती है जब उसके द्वारा किए गए प्रयासों को सम्मान देते हुए परिवार उसका साथ देता है तथा हर कदम पर कंधे से कंधा मिलकर खड़ा रहता है।

लड़कियाँ और पुरानी सोच

सुश्री आकृति कुशवाहा
पुत्री- श्री अनूप कुमार

कहते हैं लड़कियों के बिना घर नहीं चल सकता। यह सच भी है पर भारत जैसे विशाल देश में अभी भी कहीं–कहीं पर लड़कों और लड़कियों में भेदभाव देखने को मिलता है। मगर कहीं–कहीं लड़कों से ज्यादा लड़कियों को महत्व भी मिलता है।

हमारे भारत में अभी ऐसे प्रांत हैं जहाँ लड़कियों को छोटे कपड़े पहनने की इजाज़त नहीं मिलती। कुछ प्रांतो में लड़की अगर 14 साल की हो जाती है तो उसकी शादी करवा दी जाती है। 'चाइल्ड मैरिज एक्ट' के तहत यह ग़लत है लेकिन फिर भी पैसों के लालच में आकार लोग शादी कर लेते हैं।

अब ज्यादातर जगहों पर लोग 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान से जागरुक भी हुए हैं और लड़कियों को पढ़ने के लिए आगे भी भेज रहे हैं।

सभी सरकारी पदों पर लड़कियाँ आवेदन कर सकती हैं और यह पद सिलाई, कढ़ाई से लेकर प्रधानमंत्री के पद तक है। हमारी पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी थीं। कुछ राज्यों ने महिलाओं के लिए सरकारी नौकरी में आरक्षण भी रखा है।

अगर हम भारत से बाहर भी जाएं तो कई ऐसे इस्लामिक देश हैं जहाँ अभी भी औरतों का अकेले बाहर निकलना, बिना बुर्के के घूमना, ऊँची आवाज़ में बात करना, पढ़ना–लिखना, नौकरी करना और सैर करना मना है। अमेरिका जैसे देशों में लड़कों से ज्यादा लड़कियों को बढ़ावा दिया जाता है।

अब बात करें भारत की तो भारत में अभी भी लड़कियों को हर चीज के लिए ताने सुनने पड़ते हैं।

अगर लड़की मोटी हो तो "कितनी मोटी है"

अगर छोटी है तो "कितनी नाटी है"।

अगर सूट पहन ले तो "कोई संस्कारों का दिखावा कर रही है"

अगर जींस पहन ले तो "कोई संस्कार ही नहीं है"

अगर पढ़–लिख ले "इतनी पढ़ी–लिखी है, घर कैसे सम्हालेगी"

अगर न पढ़ी–लिखी हो तो "गंवार है, इसको क्या आता है"

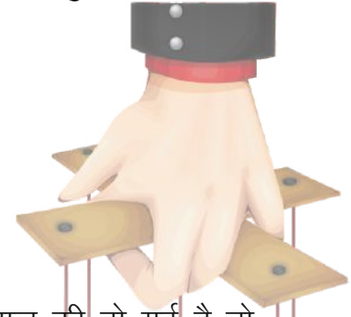

और भी बहुत कुछ सुनना पड़ता है लड़कियों को। अगर लड़की 25 साल की हो गई है तो उसके माँ बाप से ज्यादा रिश्तेदारों को परेशानी होने लगती है।

हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि वो भी एक इंसान ही है। उसकी भी अपनी मर्ज़ी होगी, अपने मन–मुताबिक चलना चाहेगी। अगर यह बातें देश के लोगों को समझ आ गई तो हमारा देश हर चीज में आगे बढ़ जाएगा।

पगलिया

श्री शशांक त्रिवेदी
लेखाकार

पूरा गाँव उसे पगलिया कहता था। वो एक काले बदसूरत चेहरे वाली लेकिन बोलचाल में एक गजब की शिष्टता लिए अधेड़ उम्र की सभ्य "पगलिया" थी। इस शब्द का मतलब ग्रामीण अंचल में पागल शब्द के स्त्रीलिंग से होता है। आधुनिकता गाँव में पहुँचने लगी है लेकिन जिन बुनियादी जरूरतों के लिए अनुदान और निर्देश सरकार द्वारा प्रेषित किये जाते है उन पर अमल नहीं हो पाता इसलिये गाँव अब भी गाँव है और 'शहर अब भी संभावना' है।

पड़ोस के गाँव में कुछ लोगों की हत्या कर दी गयी थी। हत्या के संदिग्ध उसी गाँव के थे और राजनैतिक रूप से सक्षम थे इसलिये पुलिसिया कार्रवाई महज औपचारिकता बनकर रह गई और केस की फाइल बंद कर दी गई। लोग दबी जुबान से भी उन आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों का नाम लेने में हिचकिचाते थे।

बात करीब 18 वर्ष पहले की है। 2003 की बरसात के दिन थे। न जाने कहाँ से गाँव में एक पागल महिला आ गई। उसका आना किसी को भी अजीब नहीं लगा क्योंकि पहले भी कई सारे पागल सड़क पर घूमते दिख जाते थे। गाँव हालांकि पूरी तरह गाँव नहीं था, एक राष्ट्रीय राजमार्ग के पास स्थित छोटा–सा गाँव जो लोगों के निरंतर आवागमन के कारण धीरे–धीरे एक कस्बे का रूप ले रहा था। लोग रोड के किनारे दुकान व मकान बना रहे थे। जमीन की कीमतें लगातार आसमान छूती जा रही थीं। आधुनिकता से जुड़ती एक बेहतरीन जगह थी।

वो पागल महिला दूसरे पागलों की तरह खाली हाथ नहीं आई थी। उसके पास कपड़ो की एक बड़ी पोटली थी जिसके अंदर कुछ कपड़े, बर्तन और न जाने क्या–क्या था। मैं उस वर्ष दूसरी कक्षा में था। स्कूल से आने के बाद खेलने निकल जाता था। दुनियादारी, कैरियर आदि की चिंताओं से परे एक खुशनुमा उम्र में मैं भी बड़ा हो रहा था।

मनुष्य से कभी–कभी ऐसी गलतियाँ हो जाती है जिनका पश्चाताप उसे जीवन भर रहता है और उनका प्रायश्चित करने का भी मौका नहीं मिलता। हालांकि उन दिनों ऐसी किसी भी गंभीर बात से मेरा दूर–दूर तक वास्ता नहीं था। गंभीरता अगर बचपन से ही बालक पर थोप दी जाये तो उसका विकास एक भीरु और दब्बू प्रकृति के मनुष्य के रूप में होता है। मैं किसी भी बात को लेकर कभी गंभीर नहीं रहा लेकिन समय गुज़रने के साथ–साथ उचित गंभीरता और विवेक का विकास हो गया।

पिछले 36 घंटों से मूसलाधार बारिश हो रही थी। सुबह बारिश रुकी और हल्की सी धूप निकली। मैं घर

पर बैठे–बैठे ऊब गया था सो मैंने भी दिनकर की भांति बाहर निकलकर गाँव के उस विकसित इलाके का रुख किया जो राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे अवस्थित था और बसों और ट्रकों के निरंतर आवागमन से गुलज़ार रहता था। मेरे पिताजी दुकान पर ही थे इसलिए मैं अपनी दुकान पर ही चला गया। वो पागल महिला वहीं दुकान के पास ही बैठी हुई और अपने कुछ कपड़े पलट रही थी। मुझे उस महिला से काफी लगाव हो गया था और मैं अक्सर उसके पास चला जाता। मुझे उससे डर नहीं लगता था जबकि दूसरे बच्चे उसे पत्थर मारते और पगलिया–पगलिया कहकर चिढ़ाते रहते। दुकान के पीछे एक खेत में पानी भरा हुआ था जिसमें वह कपड़े धोने लगी। मैं भी उसे पास जाकर कौतूहलवश देखने लगा। कपड़े उसने एक बबूल के पेड़ पर टांग दिये और पुनः दुकान के पास आकर बैठ गई। अपनी पोटली खोली और पानी पीने के लिए एक नया काँच का गिलास निकाला। मैं चौंक गया कि जिस पोटली में से ये मैले–कुचैले कपड़े निकाल रही है उसमें ये नए बर्तन कहाँ से आये। मैंने उससे कहा कि मैं उसका गिलास देखना चाहता हूँ। उसने हँसते हुए मुझे गिलास थमा दिया। मैंने क्षण भर उसे देखा और गिलास को एक यूकेलिप्टस के ठूंठ पर दे मारा। खन्न की आवाज के साथ गिलास चकनाचूर हो गया। मैं अपनी इस विजय का जश्न ज़ाहिर करने को था लेकिन वो पगलिया अब भी मुस्कुरा रही थी। मैं भावशून्य हो गया। तुरंत मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ। उन दिनों समझ का अभाव था इसलिये मैं उससे क्षमायाचना भी न कर सका। पिताजी ने मुझे मेरी इस धृष्टता पर काफी फटकार लगाई।

अगले दिन वो फिर अपने चिर परिचित अंदाज में हाज़िर थी। अबकी उसने अपनी पोटली से एक स्टील का चमचमाता हुआ गिलास निकाला और कहा "बाबू इसे नहीं तोड़ पाओगे" इस बात का मुझपर बिजली–सा असर हुआ। मैं उससे माफी मांगना चाहता था मगर उस उम्र में इतना शऊर किसे था जो खेद प्रकट करता।

पड़ोस के गाँव में महीने भर पहले हुए उस हत्याकांड का खुलासा हो गया। दोनों अभियुक्त गिरफ्तार कर लिये गये। वो 'पगलिया' सी०आई०डी० क्राइम ब्रांच से थी। मैंने उसे आखिरी बार पुलिस चौकी के पास चुपचाप खड़े होकर देखा। पुलिस जिप्सी में बैठकर वो पगलिया हमेशा के लिए चली गई। मैं बोझिल कदमों और गीली आँखों से चुपचाप घर चला आया और सरदर्द का बहाना बनाकर लेट गया। आज भी मुझे उस कृत्य पर आत्मग्लानि होती है कि मैंने उसका गिलास तोड़ा।

वो शायद अब अपनी नौकरी से सेवानिवृत्त भी हो गई होगी, कौन जाने कि जिंदा भी हो या नहीं। उसका चेहरा आज भी मेरी धुंधली स्मृतियों में बना रहता है।

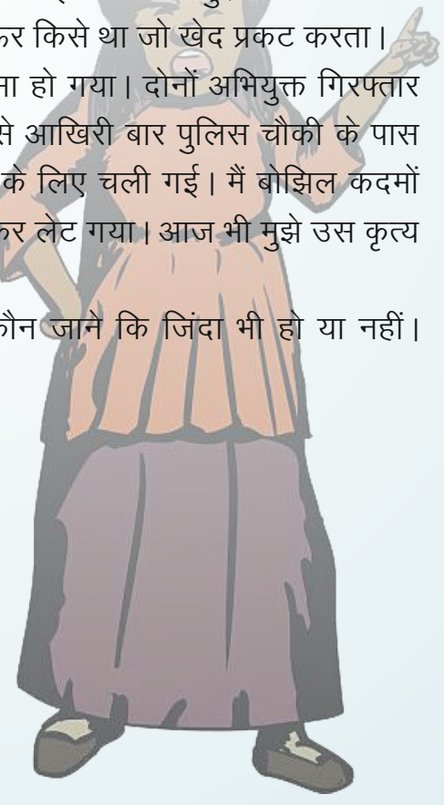

एक रुपये की कीमत

श्री शंकर लाल
वरिष्ठ लेखाकार

बहुत समय की बात है रोहित लगभग 20 वर्ष का एक लड़का था और इलाहाबाद के एक कॉलोनी में रहता था उसके पिता एक भट्टी चलाते थे जिनसे वे दूध को पका–पकाकर खोया बनाने का काम करते थे। रोहित वैसे तो एक अच्छा लड़का था लेकिन उसमे फिजूलखर्ची की एक बुरी आदत थी। वो अक्सर पिताजी से पैसा मांगा करता और उसे खाने–पीने या सिनेमा देखने में खर्च कर देता। एक दिन पिताजी ने रोहित को बुलाया और बोले देखो अब तुम बड़े हो गए हो और तुम्हें अपनी जिम्मेदारियां समझनी चाहिए। जो आये दिन तुम मुझसे पैसे मांगते रहते हो और उसे इधर–उधर उड़ाते हो ये अच्छी बात नहीं है।

क्या पिताजी कौन–सा मैं आपसे हजार रुपए ले लेता हूँ, चंद पैसे के लिए आप मुझे इतना बड़ा लेक्चर दे रहे हैं.... इतने से पैसे तो मैं जब चाहूँ आपको लौटा सकता हूँ। रोहित नाराज होते हुए बोला।

रोहित की बात सुनकर पिताजी क्रोधित हो गए। पर वो समझ चुके थे कि डांटने–फटकारने से कोई बात नहीं बनेगी। इसलिए उन्होने कहा, ये तो बहुत अच्छी बात है ऐसा करो की तुम मुझे ज्यादा नहीं बस एक रुपया रोज लाकर दे दिया करो। रोहित मुस्कुराया और खुद को जीता हुआ महसूस कर वहाँ से चला गया। अगले दिन रोहित जब शाम को पिताजी के पास पहुँचा तो वे उसे देखते ही बोले बेटा लाओ मेरे एक रुपया।

उनकी बात सुनकर रोहित जरा घबराया और जल्दी से अपनी दादी माँ से एक रुपये ले कर लौटा, लीजिये पिताजी ले आया मैं आपके एक रुपया। और ऐसा कहते हुये उसने सिक्का पिताजी के हाथ में थमा दिया। उसे लेते ही पिताजी ने सिक्का भट्टी में फेंक दिया। ये क्या आपने ऐसा क्यों किया, रोहित ने हैरानी से पूछा।

पिताजी बोले तुम्हें इससे क्या तुम्हें तो बस एक रुपया देने से मतलब होना चाहिए फिर मैं चाहे उसका जो करूँ। रोहित ने भी ज्यादा बहस नहीं की और वहाँ से चुपचाप चला गया। अगले दिन जब पिताजी ने उससे एक रुपया मांगा तो उसने अपनी माँ से पैसा मांग कर दे दिया। कई दिनो तक यही सिलसिला चलता रहा वह रोज किसी दोस्त–यार या सम्बन्धी से पैसे लेकर पिताजी को देता और वो उसे भट्टी में फेंक देते। फिर एक दिन ऐसा आया जब हर कोई उसे पैसे देने से मना करने लगा। रोहित को चिंता होने लगी की अब वो पिताजी को एक रुपया कहाँ से लाकर देगा। शाम भी होने वाली थी उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था की वो करे क्या एक रुपया भी न दे पाने की शर्मिंदगी वो उठाना नहीं चाहता था। तभी उसे एक अधेड़ उम्र का मजदूर दिखा जो किसी मुसाफ़िर को हाथ से खींचे जाने वाले रिक्शे से लेकर कहीं जा रहा था।

सुनो भैया क्या तुम थोड़ी देर मुझे ये रिक्शा खींचने दोगे, उसके बदले में मैं बस एक रुपया लूँगा।

रोहित ने रिक्शे वाले से कहा। रिक्शा वाला बहुत थक चुका था, वह फ़ौरन तैयार हो गया। रोहित रिक्शा खींचने लगा। ये काम उसने जितना सोचा था उससे कही कठिन था। थोड़ी दूर जाने में ही उसकी हथेलियों में छाले पड़ गए, पैर भी दुखने लगे। खैर किसी तरह से उसने अपना काम पूरा किया और बदले में ज़िंदगी मे पहली बार ख़ुद से एक रुपया कमाया।

आज बड़े गर्व के साथ वो पिताजी के पास पहुंचा और उनकी हथेली में एक रुपया थमा दिया। रोज की तरह पिताजी ने रुपये लेते ही उसे भट्टी में फेंकने के लिए हाथ बढ़ाया। रुकिये पिताजी, रोहित पिताजी का हाथ थामते हुए बोला, आप इसे नहीं फेंक सकते ये मेरे मेहनत की कमाई है। और रोहित ने पूरा वाकया कह सुनाया। पिताजी आगे बढ़े और अपने बेटे को गले से लगा लिया। देखो बेटा, इतने दिनों से मैं सिक्के आग की भट्टी में फेंक रहा था लेकिन तुमने मुझे एक बार भी नहीं रोका पर आज जब तुमने अपनी मेहनत की कमाई को आग में जाते देखा तो एकदम से घबरा गए। ठीक इसी तरह जब तुम मेरी मेहनत की कमाई को बेकार की चीजों में उड़ाते हो तो मुझे भी इतना दर्द होता है, मैं भी घबरा जाता हूँ.....

इसलिए पैसे की कीमत को समझो चाहे वो तुम्हारे हो या किसी और के कभी उसे फिजूलखर्ची में बर्बाद मत करो। रोहित पिताजी की बात समझ चुका था, उसने फौरन उनके चरण स्पर्श किये और अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांगी। आज वो एक रुपये की कीमत समझ चुका था और उसने मन ही मन संकल्प लिया कि अब वो कभी भी पैसे की बर्बादी नहीं करेगा।

जीवन का उद्देश्य

श्री भूपेंद्र सिंह नेगी
सहायक लेखाधिकारी

उक्त जिज्ञासा ने मानव को आदिकाल से अत्यधिक उलझाया हुआ है। दार्शनिकों, धर्मगुरुओं, विचारकों आदि ने अपने–अपने तरीकों से इस सम्बन्ध में अपने विचार दिये हैं और हर एक के अपने–अपने अनुयायी हैं। सबसे अधिक अनुयायी का समूह धर्मानुसार हैं। हालांकि जन्म के अनुसार हर आदमी, संबन्धित धर्म से सम्बन्ध हो जाता, पर इच्छानुसार वर्तमान समय में धर्मांतरण भी अनुमन्य हो गया है। धर्म की बात की जाये तो हरेक में यही सीख दी जाती है कि ईश्वर को मानना चाहिये एवं तदनुसार किस प्रकार का आचार करना चाहिये, हर धर्म ने अपने अनुसार कायदे–नियम बना रखे हैं। इसी आधार पर जीवन का उद्देश्य बताया गया है।

यहाँ पर यह भी बताना चाहूँगा कि उद्देश्य शब्द से मिलते–जुलते अर्थ से भ्रमित भी हुआ जा सकता है। जैसे– जिम्मेदारी, कर्तव्य आदि।

एक शब्द और है– लक्ष्य! जहाँ तक लक्ष्य का मतलब है– जैसे डॉक्टर बनना, राजनीतिज्ञ बनना, अभिनेता, गायक आदि।

पर जीवन का उद्देश्य से मेरा मतलब, हमने जन्म लिया है, तो क्या इसका सही मायने में कोई उद्देश्य है, या फिर सिर्फ अपने जीने के लिए जरूरी कार्य जैसे खाना–पीना, घर–गृहस्थी, बच्चों कि परवरिश आदि एवं जीवित रहने के लिए संघर्ष मात्र है।

जीवन के लिए शुरुवाती वर्षो में मैं भी यही सोचता था कि जीने का कोई विशेष उद्देश्य नहीं है। बस किसी प्रकार जीवित रहने का प्रयास करते रहने के अलावा।

पर मेरे ज़िंदगी में दो बार ऐसी स्थितियाँ आईं, प्रेम होने के सम्बन्ध में जिसके कारण काफी मानसिक परेशानियों से गुज़रना पड़ा एवं मुझे गहन विचार करने पर मजबूर कर दिया।

यहाँ पर मै यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि मैं एक बहुत ही शर्मीला एवं डरपोक व्यक्ति था। विशेषकर लोगों से बातचीत करने के मामलो में और महिलाओं से तो कभी भी हिम्मत नहीं हुई।

पहली बार के प्रेम के बारे में तब पता चला जब एक दिन अचानक मेरा मन पूरी तरह अनियंत्रित हो गया एवं मुझे लगा कि मैंने जोर से चिल्लाया है और उसका नाम मुँह से निकला है। मैं सो रहा था और जाग गया और मन अनियंत्रित हो गया। 10–12 दिन में काबू आया। इस प्रकार कई वर्ष तक साल–डेढ़ साल में मेरे साथ होता रहा। फिर एक दिन कुछ ऐसी स्थिति हुई कि अचानक मेरे मन से उसका असर शून्य सा हो गया, अचंभित हो गया पर आराम महसूस होने लगा। यह स्नातक पढ़ाई के समय के बात है। आज मैं सेवानिवृत्त होने के करीब हूँ। इस बीच मैं नौकरी में आ गया था। जैसा कि पूर्व में मैंने कहा मैं शर्मिला था तो ऐसी भावना होने पर भी कभी पास जाने कि हिम्मत नहीं कर पाया, बस दूर से ही पीछा किया करता था। अपने प्रवृत्ति को

जानते हुये मै मन के अंदर से इस भावना से अलग होने का प्रयास करता था। इस प्रकार के अंदरूनी संघर्ष अक्सर मन अनियंत्रित होने के कारण था।

उक्त भावना के कारण जो मन में एक दर्द सा रहता था अचानक उससे मुक्त महसूस कर रहा था कि फिर करीब डेढ़ महीने पश्चात् पुनः एक दूसरे के प्रति यही भावना उमड़ पड़ी । फिर से उसी प्रकार की पीड़ादायक मनःस्थिति से गुजरने लगा एवं उसी प्रकार का व्यवहार करने लगा। दूर से ही पीछा किया, पास जाने की हिम्मत नहीं की। यह जहाँ मै नौकरी करता था, उस कार्यालय की बात है। आज तीस वर्ष से अधिक गुज़र गए हैं। हम अपनी–अपनी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। पर इस बार भावना मन से निकल नहीं पा रही है।

इन दोनों के असर के कारण मैं, मेरे अंदर हो रहे भावनाओं के बारे में एवं उस पर मेरे प्रतिक्रिया के बारे में गहराई से मनन करने लगा एवं कारण ज्ञात करने की कोशिश करने लगा।

इस प्रकार इस बारे में प्रचलित मान्यताओं के अनुसार समझने की कोशिश किया पर संतुष्ट नहीं हो पाया। इसी क्रम में ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में कई विचार बनाने के पश्चात् एक विचार पर कुछ हद तक संतुष्ट हुआ जिसके बारे में मैंने पूर्व के लेखों में उल्लेख किया है।

इस प्रकार उपरोक्त संबंधित भावनाओं के बारे में विचार करते–करते यह बात शुरू में अचानक आई कि यह तो जीवन का उद्देश्य है और अधिक मनन करने पर सोच लिया कि यही सही है।

तो मेरे विचार में जीवन का उद्देश्य किसी व्यक्ति विशेष के प्रति सच्चे प्रेम की अनुभूति प्राप्त करना है मगर किसी व्यक्ति के प्रेम प्राप्त करना नहीं। अधिकांश लोग किसी के प्रति प्रेम की अनुभूति होने पर बदले में प्रेम प्राप्त करना ही अपना उद्देश्य मानते हैं तो विस्तार से बताने की कोशिश इस प्रकार कर रहा हूँ। हमारे अधिकांश प्रेम अनुभव क्षणिक एवं अस्थाई होते हैं पर हमलोग इन्हीं अनुभवों में उलझ जाने के कारण सच्चे और स्थायी प्रेम के अनुभव तक पहुँच ही नहीं पाते है। इस प्रकार अस्थाई प्रेम प्राप्त करने की कोशिश में हमलोग अन्य उद्देश्यों की तरफ भटक जाते हैं। एक विचार और रखना चाहूँगा कि स्थाई प्रेम को प्राप्त करने की पूर्ण रूप से पुरुष पर जिम्मेदारी है, स्त्री केवल प्रतिक्रिया करती है। इस प्रकार अगर प्रेम में असफलता मिलती है तो सिर्फ पुरुष ही जिम्मेदार होता है स्त्री नहीं और हाँ सच्चे अनुभव के लिये हर पुरुष के लिये इस दुनिया में एक व्यक्ति विशेष का अस्तित्व रहता है। बस उस तक पहुँचने, अनुभव करने और अंत में पहचानने एवं समझने की क्षमता होना चाहिये।

––बस इतनी सी बात––

परिवर्तन

श्री अशोक कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

परिवर्तन से हम नहीं बच सकते। परिवर्तन से बचना अगति और दुर्गति को आमंत्रित करना है। यद्यपि स्थिरता में किसी अंश में सुरक्षा है तथापि बिना जोख़िम लिए आगे नहीं बढ़ा जाता है। नियमों की स्थिरता जो विज्ञान में है और स्फूर्तिमय जीवन की गतिशीलता जो साहित्य में है, दोनों के मध्य का हमें संतुलित पथ का अन्वेषण करना है। जीवन के संतुलनों में नए और पुराने का संतुलन भी विशेष महत्व रखता है। संसार की गतिशीलता के साथ हमें भी आँखे खोलकर गतिशील होना पड़ेगा।

नवीन के लिए हमें अपने मनमंदिर के द्वार को सदा खुला रखना चाहिए तथा पूर्वाग्रहों से काम नहीं लेना चाहिए। उसके पक्ष और विपक्ष की युक्तियों को न्याय की तुला पर तौलें।

एक सीमा के भीतर नवीन प्रयोगों को भी अपने में स्थान देना चाहिए किन्तु केवल नवीनता के प्रमाणपत्र मात्र से संतुष्ट न हो जाए। जिस तर्क बुद्धि को हम प्राचीन प्रथाओं के उन्मूलन में लगाते है, उसी निर्मम तर्क को नवीन के परीक्षण में भी लगावें किंतु नवीन को भूत की भांति भय का कारण न बनावें।

लेखा संगम

पद्य संगम

प्रकृति देवो भव

श्री अजय वर्मा
वरिष्ठ लेखाकार

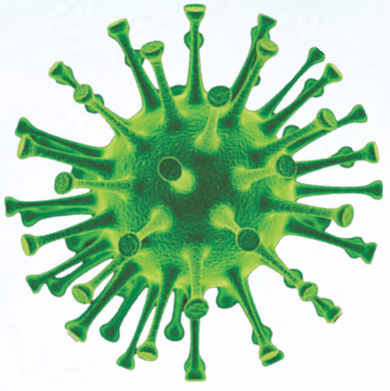

हे मानव!
अब, ठहर ज़रा तू,
सुन ले मेरी बात,
कृत्रिम जीवन के विकास और,
सुख–सुविधाओं के महाजाल ने,
तुझको बनाया दास।
तुझको सदा चेताया मैंने,
मुझको न इतना छेड़,
वर्ना भरी पड़ जाएगी,
मेरी एक थपेड़,
कहीं ज़लज़ला, कहीं सुनामी,
कहीं बाढ़ तो कहीं है सूखा,
कर दूँगा मैं हर पल रूखा।

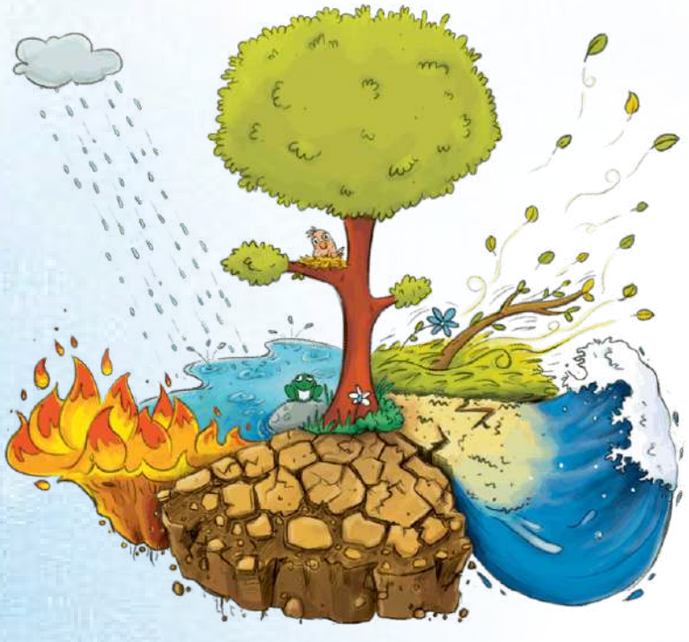

अभी तो है ये एक बानगी
आगे–आगे ख़ैर मना तू,
अपने–अपनों के प्राणों की,
तेरे कर्मों का लेखा अब,
तुझे रुला डालेगा,
मैंनें सदा ही बाँटी खुशियाँ,
तूने ज़हर में मुझको डुबोया,
तेरी शैतानी करतूतें,
मुझे बहुत तड़पाती हैं,
अभी अगर तू न संभला तो,
तुझे सदा रोना होगा,
आने वाले समय में,
ये क्या,
और बड़ा कोरोना होगा,
हे मानव!
अब ठहर ज़रा और
सोच ज़रा तू।

मेरी भाषा हिंदी

श्री अनुराग निषाद
पुत्र- श्री अनिल कुमार, लेखाकार

मातृभाषा मेरी हिंदी,
राष्ट्रभाषा मेरी हिंदी।
राजभाषा मेरी हिंदी,
साहित्यिक भाषा मेरी हिंदी।।

भारत के लिए प्रकृति का वरदान,
भारतीयों की भाषा उनका सम्मान।
यह भाषा बढ़ाएगी देश का मान,
भारतीयों की यह भाषा उनकी शान।।

राष्ट्रहितकारी है सुयोग्य भाषा
शीघ्र सीखे जाने है योग्य भाषा।
राष्ट्र की अभिव्यक्ति का स्रोत है हिंदी,
जनता की चित्तवृत्ति का प्रतिबिंब है हिंदी।।

भारतीय आत्मा की वाणी है,
देश का गौरव बढ़ाती है।
साहित्य की आत्मा है यह भाषा,
विशिष्ट गुणों से परिपूर्ण राष्ट्रभाषा।।

भारतीय साहित्य की करती है उन्नति,
संस्कृत भाषा की वाणी का करती प्रस्तुति।
भारतीय जनता के बीच कार्य का साधन है हिंदी,
धन्य है भारत देश जिसकी भाषा है हिंदी।।

भारतीय संस्कृति का है प्रतीक,
राष्ट्रीय एकता का है प्रतीक।
भारत की अमरवाणी है हिंदी,
धन्य हूँ मैं कि मेरी भाषा है हिंदी।।

प्रेरणा

श्री अरुण कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मत बनो आइना, टूट जाने का डर है,
बनो पत्थर, कुछ तोड़ना अगर है।
मत बनो फूल, मुरझाने का डर है,
बनो शूल, तुम्हें चुभाना अगर है।

मत बनो पवन, बह जाने का डर है,
बनो आँधी, कुछ बहाना अगर है।
मत बनो बादल, उड़ जाने का डर है,
बनो बिजली, किसी पर गिरना अगर है।

मत करो नफ़रत, दिल टूटने का डर है,
करो मोहब्बत, दिल जीतना अगर है।
मत डरो मौत से एक दिन खत्म होना सफ़र है,
मरती नहीं आत्मा, वह तो हमेशा अमर है।

ग़ज़ल

श्री सग़ीर अहमद सिद्दीक़ी
लेखा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

हक़ीक़त से नज़रें मिलाओ तो जानें,
कि आईना खुद को दिखाओ तो जानें।

मोहब्बत में दीवार कैसी अना की,
कभी दो क़दम चल के आओ तो जानें।

मिलाते रहे उम्र भर हाथ लेकिन,
जो दिल से भी दिल को मिलाओ तो जानें।

बनाना है दिलकश गर अपने चमन को,
हर एक रंग के गुल खिलाओ तो जानें।

बहुत हो चुकीं धर्म–मज़हब की बातें,
अमन के भी कुछ गीत गाओ तो जानें।

जब आदम की औलाद हर आदमी है,
हर एक को गले से लगाओ तो जानें।

दिया मत बुझाओ किसी के भी घर का,
एक ऐसी दिवाली मनाओ तो जानें।

तुम्हें तो मनाने में है उम्र गुज़री,
कभी रूठें हम, तुम मनाओ तो जानें।

हर एक शख़्स जीता है अपने लिए पर,
किसी के जो तुम काम आओ तो जानें।

हैं काँटों में रह कर भी गुल खिलखिलाते,
जो फूलों सा खुद को बनाओ तो जानें।

सग़ीर आँधियाँ नफ़रतों की चली हैं,
दिया प्यार का तुम जलाओ तो जानें।

बहादुर शाह ज़फर (तृतीय और अंतिम भाग)

श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ लेखाकार

पनाहगाह नहीं कब्रगाह थी।
आग के जलते हुए पलीते बाँध–बाँध कर,
मारे थे बाग़ियों ने लखनऊ रेजीडेंस के अंदर।
कहाँ गयी थी इनकी जांबाजी और जंगबाजी?
बड़े सूरमा बनते थे ये,
हिंदुस्तानी लोहे की टंकार से
पहली बार पाला पड़ा था इनका।

बरेली में बग़ावत चढ़ी थी परवान।
लीडर था पठान खान बहादुर खान।
तलवार के एक–एक वार से,
बारह–बारह फिरंगियों का सर कलम करने
वाला वो पठान शान था बरेली की।
आँवला, बरेली और रामपुर की सड़कों पर
मारामारी का वो आलम था –
रास्तों से राहगीर और दरख्तों से
परिन्दे नदारद थें।
गोरों की पूरी गारद ने घुटने टेक
दिये थे इस पठान के आगे।
कहाँ गयी थी इनकी जांबाजी और जंगबाजी?
बड़े सूरमा बनते थे ये।
हिन्दुस्तानी लोहे की टंकार से
पहली बार पाला पड़ा था इनका।

आरा में जिसने उठायी तलवार ।
नाम था कुंवर सिंह शेर–ए–बिहार।
चढ़ लिया था आजमगढ़ पर।

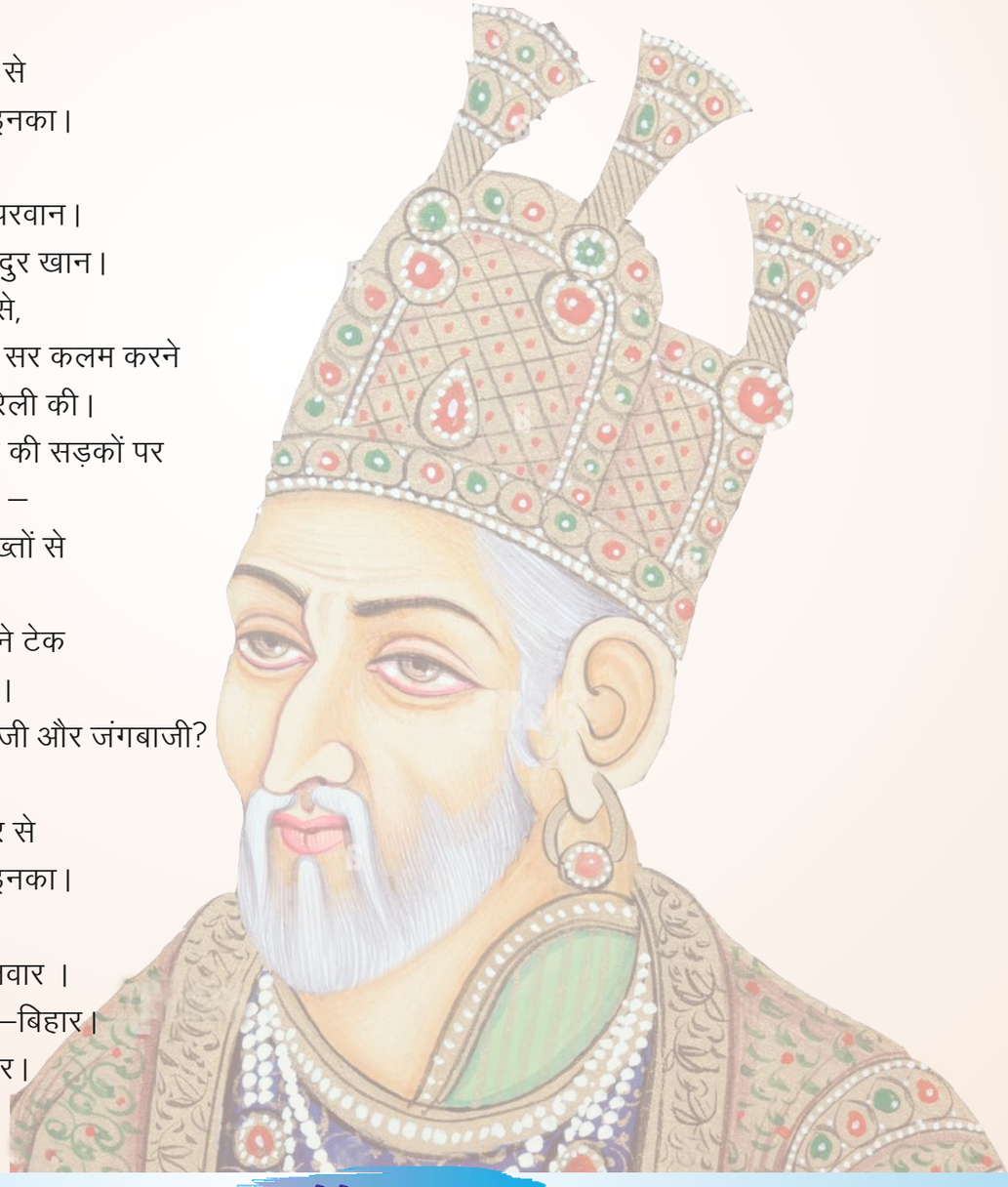

घेर लिया था आरा के कलेक्टर को
काट डाला था कलेक्टर के कारिंदो को
फिरंगियों के कटे हुये सर भाले की
नोक पर रखकर घुमाया था
इस बहादुर ने आरा की गलियों में।
बहादुर था वो, ठाकुर था वो।
राजपूती आन, बान, शान के कायल थे हम।
कहाँ गयी थी इनकी जांबाजी और जंगबाजी?
बड़े सूरमा बनते थे ये,
हिन्दुस्तानी लोहे की टंकार से
पहली बार पाला पड़ा था इनका।

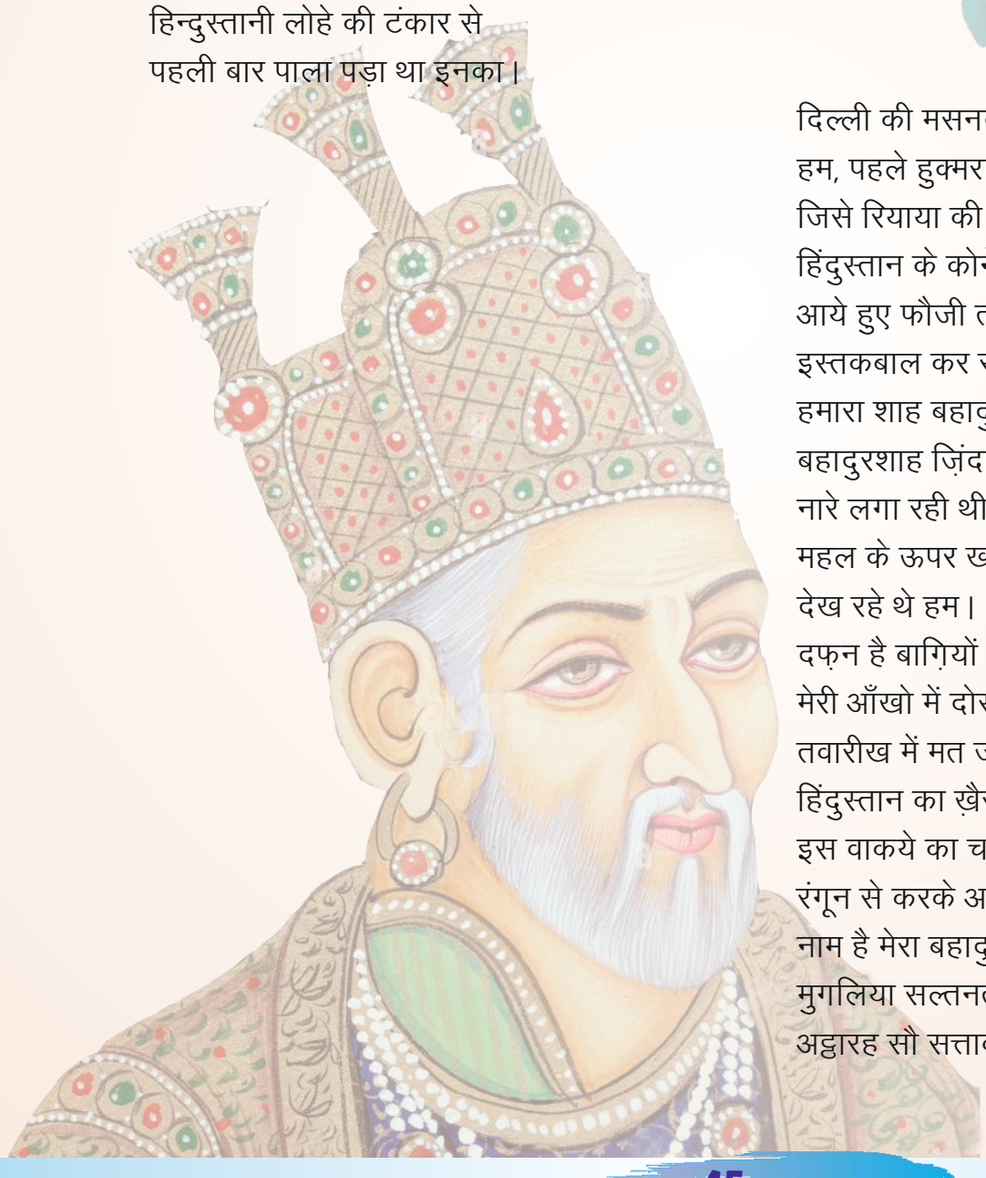

दिल्ली की मसनद पर बैठने वाले
हम, पहले हुक्मरां थे।
जिसे रियाया की हिमायत हासिल थी।
हिंदुस्तान के कोने–कोने से
आये हुए फौजी तलवारें उठा–उठाकर
इस्तकबाल कर रहे थे हमारा।
हमारा शाह बहादुरशाह, हमारा शाह बहादुरशाह
बहादुरशाह ज़िंदाबाद, बहादुरशाह ज़िंदाबाद।
नारे लगा रही थी अवाम
महल के ऊपर खड़े होकर ये मंज़र
देख रहे थे हम।
दफ़न है बाग़ियों का वो जलाल आज भी
मेरी आँखो में दोस्त।
तवारीख में मत जाइये, मेरे पास आइये।
हिंदुस्तान का ख़ैरख़्वाह हूँ मैं।
इस वाकये का चश्मदीद गवाह हूँ मैं।
रंगून से करके आया हूँ सफ़र,
नाम है मेरा बहादुरशाह ज़फर।
मुगलिया सल्तनत का आफ़ताब था मैं,
अट्ठारह सौ सत्तावन की गदर का सरताज था मैं।

माँ

श्री चंचल कुमार तिवारी
डी. ई. ओ.

तुम जननी, तुम शक्ति स्वरूपा,
बहु–विध रूप धरि अनूपा,
सत्य करुणा की तुम खान,
ममता की तुम पहचान।
तुम प्रकृति, तुम अनूपा,
तुम धरा, तुम जगतस्वरूपा,
महिमा है तेरी महान,
भगवन को भी जन्मति हो माँ।
तुम जननी जन्म का आधार,
मिलती है तुझसे पहचान,
कृतज्ञ हैं, जन्म ले, जगत को जाना,
आँचल तले है स्वर्ग, पहचाना।
नमन है तुझे! हे वीर, वीरांगनाओं की जननी,
कोटि–कोटि तन, ऋणी तुम्हारा,
हे प्रतिपालक यशोधरा!
चीर हृदय, हम फसल उगाते,
अमूल नव जीवन का रस पाते।
तुम जननी की जननी हो अब आधारा,
छूटा जो प्रिय जननी का सहारा,
हृदय विचलित है जो तुम से पुनः मिल पाते,
काश! आकर तुम्हें गले लगाते।
पास बैठ, अपना हाल सुनाते,
आँचल तले, स्वर्ग धरा को देख पाते।
दो अभय वरदान मैं कुछ कर पाऊँ,
पा आशीष तेरा, मैं अपनी नैया पार कर पाऊँ,
आ तेरे श्री चरणों में फिर से बैठ जाऊँ।
आ मैं माँ तेरे आँचल में फिर से लेट जाऊँ,
शीश नवा, तेरा अमृत वरदान पाऊँ।।

कविता

सुश्री पुष्पा मिश्रा
सहायक लेखाधिकारी

मुस्कान

जो नैन भर आयें
तो छलकने देना,
मन को कभी न भरने देना।
ये अफ़सोस किस बात का है?
जो गुज़र गई वो कैसे बतायें
हर बात पर ये नहीं कहना!
बेसाख्ता सी हंसी और वो मासूमियत!
कभी ज़िंदगी से बेज़ार मत होना।
ज़िंदगी से जो भी मिला,
हँस के स्वीकार कर लेना।
एक मुस्कराहट निछावर करना
हँसते हुये मोती बिखरा देना।

ज़ख्म जो रिसते हैं, तो क्या?
ज़ख्म कोई और न मिलने पाये,
बस अपनी मुस्कुराहट न खोने देना।
सितारों की चमक खूबसूरत होती है!
जुगनू की तरह न खुद को खोने देना।
ज़िंदगी के कैनवास पर भावनाओं का रंग
कोई जीवंत चित्र सजने देना,
हो सके, तो मुस्कुराहट कभी न खोने देना।

हिन्दी– भाषा अथवा परिभाषा

सरल, सुगम, ओजस
मन से मन को बांधने चली है
आज फिर से हिंदी कलम के राग से
शब्दों को बांधने चली है।

मेरी काली स्याही पर चमकती आंच–सी है,
भावनाओं का अनुपम फाग गाती हुई,
शुचित अनुराग, दग्ध अंतस को शीतल करती
व्यथित, आकुल हृदय की प्रिया है हिंदी।

लिखना, बिखरना और निखरना सिखाती है।
हंसाती है, मनाती है और रुलाती है
मुखर और मधुर है
हिंदी वेदना है, विरह है,
मान है, मनुहार है,
वैराग है, प्रेम का राग है।
हिंदी भाषा ही नहीं है!
जीवन की परिभाषा है।

सा. का. नि. 1052 --राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात:-

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ--

क. इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है।

ख. इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

ग. ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो:-

क. 'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है;

ख. 'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थातः–

ग. केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

घ. केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

ङ. केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

च. 'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

छ. 'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

ज. 'हिन्दी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है;

झ. 'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

ञ. 'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

ट. 'क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

ठ. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है ।

3. राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से–

क. क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई

पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगाः परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे ।

ख. क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

3. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

4. उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क'या'ख'में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं । परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर अवधारित करे।

4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि–

क. केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

ख. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय–समय पर अवधारित करे;

ग. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

घ. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग'में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर अवधारित करे;

ङ. क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान

रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर अवधारित करे ।

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि––
अ. क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा।
ब. क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा।

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी ।

5. हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर––

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

6. हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग–

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज़ हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।

7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि–

1. कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।
2. जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिंदी में दिया जाएगा।
3. यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना,जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिंदी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना –

1. कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।
2. केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के

अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

3. यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

4. उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहाँ ऐसे कर्मचारियों द्वारा,जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा ।

9. हिन्दी में प्रवीणता–

यदि किसी कर्मचारी ने–

क. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

ख. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

ग. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

10. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान–

1. क) यदि किसी कर्मचारी ने–

I. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

ii. केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीक्षा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

iii. केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

ख. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

3. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

4. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा ।

11. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि–

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी। परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

12. अनुपालन का उत्तरदायित्व–

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह––

I. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और

ii. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे ।

2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय–समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है ।

abandonment	परित्याग
abate	1. उपशमन करना, उपशमन होना 1. कमी करना, कमी होना
abatement	1. उपशमन 2. कमी
abbreviation	संक्षिप्ति
abdication	पदत्याग
abditory	मालख़ाना
abduction	अपहरण
abetment	दुष्प्रेरण
abettor	दुष्प्रेरक
abeyance	प्रास्थगन
ability	योग्यता
ab initio	आदित, आरंभ से
able	योग्य
abnormal	अपसामान्य
abnormal increase	अपसामान्य वृद्धि
abolition	उन्मूलन
abolition of post	पद समाप्ति
aboriginal	आदिवासी
above cited	उत्कथित, ऊपर कथित
above mentioned	ऊपर लिखित
above par	अधिमूल्य पर
above quoted	ऊपर उद्धृत
above said	उपर्युक्त
abridge	कम करना (जैसे शक्ति), संक्षिप्त करना (जैसे रिपोर्ट)
abstain	प्रविरत रहना
abstract	सार
abstract book	सार–पुस्तिका
abstract contingent bill	संक्षिप्त आकस्मिक बिल
abstract of tender	निविदा का सार, टेंडर का सार

abstractor	सारकर्ता
abstract sheet	सार पत्रक
abstract statement	संक्षिप्त ब्यौरा, सार विवरण
absurd	अर्थहीन, बेतुका
absurdity	अर्थहीनता, बेतुकापन
abundance	प्रचुरता
academic	अकादमिक, शैक्षणिक, विद्या संबंधी, शास्त्रीय
academic council	विद्या परिषद
academic discussion	शास्त्रीय चर्चा
academician	विद्याविद्
academic leave	अकादमिक छुट्टी
academic qualification	शैक्षणिक अर्हता, शैक्षणिक योग्यता
academic record	शैक्षिक रिकार्ड, शैक्षिक अभिलेख
academics	विद्याविद्
academic session	शैक्षणिक सत्र, शिक्षा–सत्र
academic year	शिक्षा वर्ष
academy	अकादमी
accede	1. मान लेना 2. अधिमिलन
acceleration	त्वरण
accept	स्वीकार करना, मानना
acceptability	स्वीकार्यता
acceptable	स्वीकार्य
acceptance	1. स्वीकृति 2. प्रतिग्रहण (विधि)
acceptance of office	पद–स्वीकृति
acceptance of tender	निविदा की स्वीकृति, टेंडर की स्वीकृति
access	पहुँच
accession	1. राज्यारोहण, पदारोहण 2. परिग्रहण
accession rate	नियुक्ति दर, परिग्रहण दर

accessory	1. अनुषंगी 2. उपसाधन
accessory licence	अनुषंगी लाइसेंस
acclimatization	पर्यनुकूलन
accommodate	सामंजस्य बिठाना, स्थान देना
accommodation	1. आवास 2. निर्वाह
accompanist	संगतकार
accompanying letter	सहपत्र
accomplished	1. प्रवीण 2. सुसंस्कृत
accord	1. समझौता 2. प्रदान करना 3. मेल खाना, अनुरूप होना
accordance	अनुरूपता, संगति
accordingly	तदनुसार
accord priority to	प्राथमिकता देना, प्राथमिकता प्रदान करना
account	1. लेखा, खाता 2. हिसाब
accountability	जवाबदेही
accountable	1. जवाबदेह 2. देनदार
accountal	लेखा–जोखा
accountancy	1. लेखाशास्त्र, लेखाविधि 2. लेखा पालन, लेखा कार्य
accountant	लेखाकार
account book	लेखा बही
account circle	लेखा मंडल
account for	1. कारण बताना 2. लेखा–जोखा देना
account head	लेखा–शीर्ष
accounting policies	लेखाकरण नीतियाँ
accounting unit	लेखाकरण इकाई, लेखा इकाई, लेखा मात्रक (जैसे रुपया, डालर आदि)
accoutrement	साज–सज्जा
accredit	प्रत्यायित करना
accreditation	प्रत्यायन
accretion	अभिवृद्धि

हिंदी भाषा से संबंधित सूक्तियां

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

मदन मोहन मालवीय

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।

पुरुषोत्तम दास टंडन

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

सुमित्रानंदन पंत

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

डॉ. संपूर्णानंद

भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

स्वामी दयानंद

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

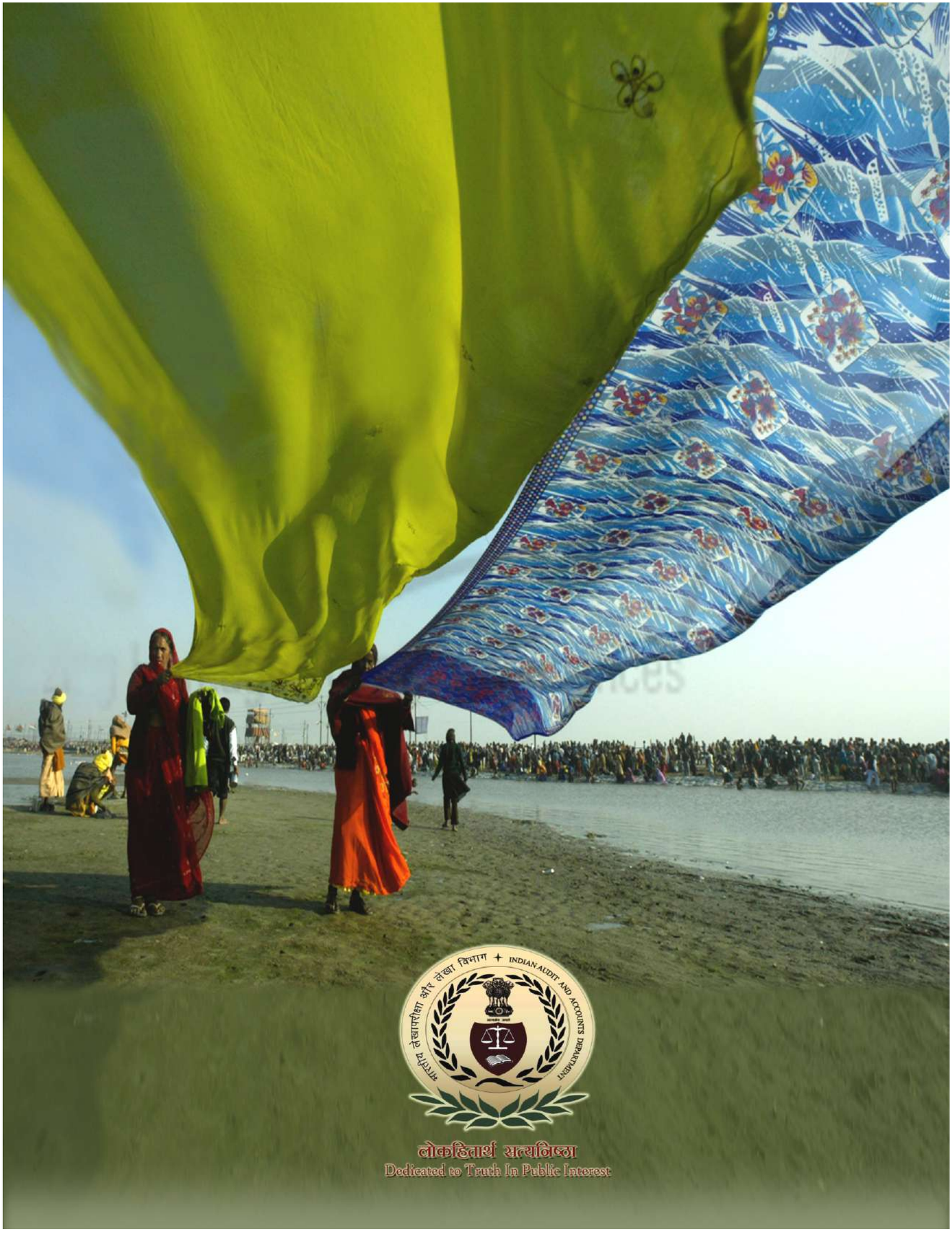
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth In Public Interest